Knowledge of Science

आखिर क्यों ?

अपने ज्ञान को बढ़ायें

उगते और डूबते समय सूर्य लाल दिखाई देता है, क्यों ?

दूध उजला दिखाई देता है, क्यों ?

श्वास ठण्ड में दिखाई देता है, क्यों ?

कोयल वसंत ऋतु में ही गाती है क्यों ?

महिलाओं की आवाज सुरीली एवं पतली होती है, क्यों ?

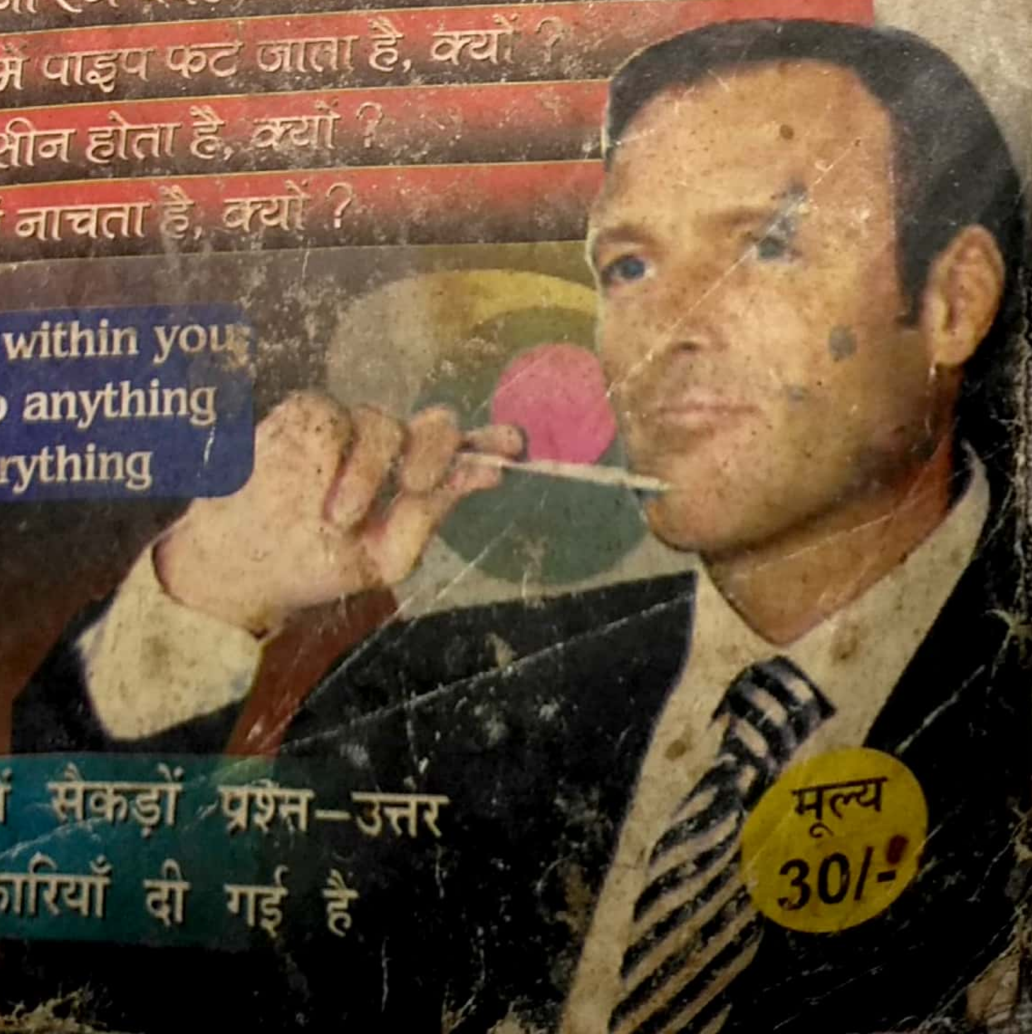
पत्ते का रंग हरा होता है, क्यों ?

गिरगीट अपना रंग बदलती है, क्यों ?

ठंढा के दिन में पाइप फट जाता है, क्यों ?

परमाणु उदासीन होता है, क्यों ?

कपूर पानी में नाचता है, क्यों ?



इस पुस्तक में सैकड़ों प्रश्न-उत्तर
की जानकारियाँ दी गई है

नवीन संस्करण

आखिर
क्यों और कैसे
अद्भूत चमत्कार

सभी प्रकार की ज्ञानवर्धित तथा दिमागी चेतना
दिलानेवाली अद्भूत चमत्कारिक पुस्तक

प्रकाशक :
S. S. PUBLICATION
Krishna Nagar, PATNA

मूल्य : 40/-

अदभुत चमत्कारिक : परिचय

● भारतीय मान्यता के अनुसार हाथ मिलाना उचित है या नहीं क्यों?

भारतीय मान्यता के अुसार हाथ मिलाने से अपने शरीर की संचित शक्ति दूसरे में प्रवेश कर जाती है। इस तरह शरीर. में क्षीणता (कमजोरी) आती है। प्राचीन काल से ही गुंरुजन अपने शिष्यों के सिर पर हाथ रखकर 'शक्तिपात' करते हैं अर्थात् बिना उसे शक्ति प्रदान करते हैं।

● हाथ मिलाना उचित है या अनुचित क्यों ?

पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करने से यहाँ हाथ मिलाने का प्रचलन हुआ। यह उचित नहीं है क्योंकि हाथों में अनेक प्रकार की संक्रामक बीमारियों के वायरस चिपके रहते हैं जो हाथ मिलाने से आदान-प्रदान हो जाता है। इस तरह विज्ञान के अनुसार हाथ मिलाना उचित नहीं है।

● नमस्ते कहना उचित है या नहीं क्यों ?

नमस्ते शब्द की रचना संस्कृत भाषा के 'नमः' और 'ते' शब्दों के मिलने (संधि) से बना। नमः + ते = नमस्ते ।

'नमः' का अर्थ होता है 'झुकना' और 'ते' का अर्थ है 'तेरे लिए'।

अर्थात् 'तू' इस तरह 'तू' शब्द इतना ओछा औ अव्यवहारिक शब्द है जो कि सामने वाले के सम्मान को ठोस पहुचाता है। यदि कोई अपने गुरुजन, बुजुर्ग अथवा अपने से उम्र में बड़े व्यक्ति को 'नमस्ते' कहता है तो उचित है या अनुचित, इसका निर्णय आप स्वयं करें।

● कुछ लोक गुडमॉर्निंग, गुडनून, गुड इवनिंग आदि कहकर अभिवादन करते हैं। यह भी उचित नहीं है । क्यों ?

अभिवादन हेतु गुडमॉर्निंग आदि अंग्रेजी के शब्दों का प्रचलन ईसाईयों ने किया किन्तु आश्चर्य की बात है कि अभिवादन के इन शब्दों में कहीं भी ईश्वर का नाम नहीं है और न ही कृतज्ञता जो ईश्वर के प्रति होती है जबकि जैराम, राधेकृष्ण, सीताराम आदि शब्दों के उच्चारण मात्र से ही जिह्वा (जीभ) पवित्र हो जाती है। अब 'गुडमॉर्निंग' आदि शब्दों को ले लीजिए। यदि किसी के घर में चोरी हो गयी है या कोई अप्रिय घटना घटित हो गयी है और सुबह-सुबह आप उसके घर पहुंचकर 'गुडमॉर्निंग' कहें तो वह जल-भुनकर राख हो जायेगा जबकि उसकी तो मॉर्निंग (सुबह) खराब हो चुकी है। जहां आप गुड मार्निंग बोलते हैं वहाँ 'राम-राम' कहेंगे तो सामनेवाला प्रेमपूर्वक आपका अभिवादन स्वीकार करेगा।

- **हाथ न मिलायें, नमस्ते न कहें, गुडमॉर्निंग न कहें तो दूसरों का अभिवादन कैसे करें ?**

अपने गुरुजनों एवं बड़ी उम्र वालों का चरण स्पर्श करें, अपने से छोटी उम्र वालों को आशीर्वाद प्रदान करें तथा अपने बराबर उम्र वालों को हाथ जोड़कर देवताओं का नाम का जयकारा करें। जैसे—जय श्री कृष्ण, जैराम, जै माता दी आदि।

- **ईश्वर का अभिवादन किस प्रकार करना चाहिए ?**

ईश्वर का अभिवादन वेद पाठ, स्त्रोत पाठ, श्रद्धा, भक्ति एवं साष्टांग प्रणाम (क्षैतिज पेट के बल लेटकर करना चाहिए।

- **साष्टांग प्रणाम करने का कारण स्पष्ट करें ?**

साष्टांग प्रणाम करने से उस देवी-देवता को, जिसे आप प्रणाम कर रहे हैं, उनके सामने दृष्टि, मस्तक, तन-मन झुक जाता है तथा अहं भावना नष्ट होकर प्रभु के चरणों में समर्पित हो जाता है।

- **पीपल वृक्ष की पवित्रता का धार्मिक कारण क्या है ?**

पीपल वृक्ष समस्त वृक्षों में सबसे पवित्र इसलिए माना गया है क्योंकि हिन्दुओं की धार्मिक आस्था के अनुसार स्वयं भगवान श्री हरि विष्णुजी पीपल वृक्ष में निवास करते हैं। श्रीमद् भगवद्‌गीता में स्वयं भग्रवान श्री कृष्णजी अपने मुख से उच्चारित किये हैं कि वृक्षों में मैं 'पीपल' हूँ। स्कन्धपुराण के अनुसार पीपल के मूल (जड़) में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्रों में भगवान हरि, और फलों में समस्त देवताओं से युक्त अच्युत भगवान सदैव निवास करते हैं।

- **क्यों वैज्ञानिक दृष्टि से भी पीपल वृक्ष पूज्यनीय है ?**

पीपल ही एक मात्र ऐसा वृक्ष है जो चौबीसों घंटे (दिन-रात) ऑक्सीजन का उत्सर्जन (निकालता) है। जो जीवधारियों के लिए 'प्राण-वायु' कही जाती है। प्रत्येक जीवधारी ऑक्सीजन लेता है और कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ता है। वैज्ञानिक खोजों से यह तथ्य सिद्ध हो चुका है । ऑक्सीजन देने के अलावा पीपल वृक्ष में अन्य अनेक विशेषताएँ हैं जैसे इसकी छाया सर्दी में ऊष्णता (गर्मी) देता और गर्मी में शीतलता देती है। इसके अलावा पीपल के पत्तों से स्पर्श करने से वायु में मिले संक्रामक वायरस नष्ट हो जाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार इसकी छाल, पत्तों और फल आदि से अनेक प्रकार की रोग नाशक दवायें बनती हैं। इस तरह वैज्ञानिक दृष्टि से भी पीपल वृक्ष पूज्यनीय है।

- **क्या 'गो-मूत्र' पवित्र है ? क्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी गो-मूत्र पवित्र है ?**

हिन्द धर्म परम्परा के अनुसार गो (गाय) को माता समान माना गया है। गोमाता शुचि (पवित्र) है। इनका मुख का भाग अपवित्र माना गया है किन्तु पीठ के पीछे का भाग पवित्र

माना गया है। अतः गो-मूत्र और गोबर दोनों पवित्र हैं। गोमूत्र में पारद और गंधक के तात्विक गुण अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। गो-मूत्र का सेवन (इस्तेमाल) करने से प्लीहा और यकृत के रोग नष्ट हो जाते हैं। ऐसे प्रमाण मिले हैं। गो-मूत्र कैंसर और भयानक रोगों को भी ठीक करने में सहायक है। संक्रमण से उत्पन्न बीमारियाँ भी ठीक हो जाती है। इस तरह वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह पवित्र है।

● गंगाजल अति पावन (पवित्र) क्यों कहा जाता है ?

गंगा को देवताओं की नदी कहते हैं। इसके जल में कभी कीड़े नहीं पड़ते। इसका उद्‌गम स्थल -'गोमुख' है जिस कारण इसका जल पवित्र माना जाता है।

● गाय का दूध पवित्र है तो क्यों ?

पौष्टिक एवं सतोगुण प्रधान गाय का दूध देवताओं को चढ़ाया जाता है। धर्म शास्त्रों में गो-दुग्ध को शुचि माना गया है। गाय के दूध के सेवन से संग्रहणी, शोथ आदि रोग नष्ट हो जाते हैं। यह स्थूलता (मोटापा) और मेदा वृद्धि को भी दूर करता है। इसमें प्रोटीन एवं विटामिन उचित मात्रा में पाया जाता है। जो बालकों के लिए अति उत्तम है। माँ के दूध के बाद डॉक्टर बच्चों को गाय का दूध पिलाने की सलाह देते हैं।

● बिना स्नान किये भोजन करना उचित है अथवा अनुचित।

शास्त्र कहता है कि बिना स्नान किये भोजन करना गंदगी खाने के समान होता है–'अस्त्रायी समलं भुक्ते'।

● स्नान करने से पहले क्या कुछ खाया जा सकता है ?

स्नान करने से पूर्व यदि जोरों की भूख लगी है तो स्नान किये बिना तरल (द्रवरूपी) भोजन किया जा सकता है, जैसे दूध, गन्ने का रस आदि तथा फल का भी सेवन कर सकते हैं। औषधि (दवा) भी ली जा सकती है।

● कुश को धारण करने का वैज्ञानिक पक्ष क्या है?

कुश नन-कण्डक्टर होता है। इसीलिए पूजा-पाठ, जप, होम आदि करते समय कुश का आसन बिछाते हैं और पवित्री स्वरूप हाथ की उंगली में धारण करते हैं । जिससे बार-बार हाथ को इधर-उधर करने आदि से भूमि का स्पर्श न हो अन्यथा संचित शक्ति 'अर्थ' होकर पृथ्वी से चली जायेगी। अगर भूलवश हाथ पृथ्वी पर पड़ भी जाये तो भूमि से कुश का ही स्पर्श होगा।

● कपूर पानी में नाचता क्यों है ?

कपूर पानी में घुलनशील होता है। पानी में जब कपूर घुल जाता है तो पानी का पृष्ठ तनाव कम हो जाता है। इसलिए पानी की सतह पर जहाँ कपूर रहेगा वहाँ पानी का पृष्ठ तनाव कम हो जायेगा। शुद्ध पानी की सतह जहाँ पृष्ठ तनाव अधिक है, कपूर को अपनी ओर आकर्षित करेगा। अतः कपूर उस ओर जाएगा । जहाँ आने पर उस पानी का पृष्ठ तनाव

कम हो जाएगा तथा वह फिर से दूसरी ओर जाएगा। यही क्रिया बार-बार होती रहेगी और कपूर नाचता रहेगा।

● 'ब्राह्मण' को देवता कहा गया है क्यों ?

समूचा संसार देवताओं के अधीन माना गया है और देवता सदैव मंत्रों के अधीन रहते हैं। अर्थात् मंत्रों से उनकी पूजा, आराधना की जाती है तब प्रसन्न होते हैं और उन मंत्रों के ज्ञाता, मंत्रों का प्रयोग रहस्य आदि का ब्राह्मण भली प्रकार जानते हैं। इस तरह ब्राह्मण देवताओं के समतुल्य हुए। इसीलिए ब्राह्मणों को देवता कहा जाता है।

● ब्राह्मण से ही पूजा-पाठ क्यों करायें, अन्य से नहीं क्यों ?

ब्राह्मण प्राचीन काल से ही जप-तप, पूजा-पाठ, आराधना उपासना में संलग्न हैं। धर्मशास्त्र, कर्मशास्त्र आदि के ज्ञाता होने के साथ-साथ इनमें उदारता, सात्विकता तथा त्याग की भावना होती है जिस कारण ये ईश्वरतत्व के सर्वाधिक निकट रहते हैं तथा परम्परागत पूजा-पाठ करने की मान्यता भी इन्हें प्राप्त है।

● ब्राह्मणों को क्या दक्षिणा देना आवश्यक है ?

नीतिशास्त्र के अनुसार ब्राह्मण, गुरुजन, देवता के पास कभी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। क्योंकि इनके पास जो खाली हाथ जाता है उसे खाली हाथ वापस भी आना होता है। फिर यदि आप किसी से कोई कार्य कराते हैं तो उसका पारिश्रमिक तो देना ही पड़ता है तो फिर पूजा-पाठ आदि पुण्य कर्म करानेवालों ब्राह्मणों को दक्षिणा देना परम आवश्यक हो जाता है।

● दिन में सोना चाहिए या नहीं ?

दिन में कदापि नहीं सोना चाहिए। आयुर्वेद के कथनानुसार दिन में सोने से आयु क्षीण (घटती है) होती है। केवल ग्रीष्म ऋतु में सो सकते हैं लेकिन ज्यादा देन तक नहीं। यदि रजस्वला स्त्री दिन में सोती है और ऋतु काल में उसे गर्भ रह जाय तो भविष्य में पैदा होनेवाला शिशु बहुत अधिक सोनेवाला होता है।

● रजस्वला का क्या अर्थ होता है ?

रजोदर्शन से रजनिवृत्ति के चार दिनों के मध्य काल में स्त्री को 'रजस्वला' कहते हैं।

● ताम्रपात्र (तांबे के पात्र) में भोजन करना चाहिए या नहीं।

ताम्र पात्र में भोजन करना निषिद्ध माना गया है क्योंकि हिन्दुओं की धर्म मान्यता के अनुसार ताम्रपात्र केवल देवपूजन के प्रयोग में लाया जाता है।

● ताम्र पात्र में भोजन न करने के पीछे क्या कोई वैज्ञानिक कारण भी है ?

ताम्र पात्र में जल के अतिरिक्त अन्य पदार्थ रखने पर भोजन और तांबे के पात्र में रासायनिक अभिक्रिया होने लगती है जिससे पात्र में रखा हुआ भोज्य पदार्थ विकृत होने लगता है।

● भोजन के उपरांत घूमना टहलना चाहिए अथवा विस्तर पर लेटकर आराम करना चाहिए।

भोजन ग्रहण करने के पश्चात् कम से कम सौ कदम चलना अति आवश्यक है। चलने से भोजन यदि आहार नली में कहीं-थोड़ा बहुत फंसा भी होता है तो वह आसानी से पेट में पहुंच जाता है जबकि सोने से उसी स्थान पर रूका रह जाता है जिससे आहार नली में कभी-कभी समस्या भी उत्पन्न हो जाती है। भोजन करके तुरन्त सोने से कई प्रकार रोग उत्पन्न हो सकते हैं और बैठे रहने से पेट बढ़ जाता है।

● भोजन के तुरंत बाद पानी पीना चाहिए या नहीं ?

भोजन के पहले पानी पीना अमृत समान है और भोजन के बाद पानी विष (जहर) के समान है। अतः भोजन करने के 15 अथवा 20 मिनट पश्चात् पानी पीये। यदि संभव हो तो आधे घंटे या एक घंटे बाद पीयें।

● भोजन के बाद पानी पीना विष के समान क्यों ? क्या इसका कोई वैज्ञानिक कारण भी है ?

भोजन करने के पश्चात् शरीर में एक प्रकार की ऊष्णता (गर्मी) का अनुभव करते हैं। ऐसा क्यों ? क्योंकि अन्न में गर्मी होती है और वह गर्मी पेट में भोजन के माध्यम से पहुंचती है जठराग्नि उस भोजन को पचाने के कार्य में लग जाती है तथा अन्न की गर्मी से उत्पन्न गैस अपने मार्गों से बाहर निकलती है जबकि तुरन्त बाद पानी पीने से निकलने वाली गैस पानी की शीतलता से दब जाती है और बाद में अनेक प्रकार के रोगों के रूप में उत्पन्न होते हैं।

● शंख ध्वनि करने के पीछे वैज्ञानिक रहस्य है क्यों ?

शंख ध्वनि करनेवाले व्यक्ति को दमा की बीमारी, श्वास रोग, फेफड़ों का रोग, इन्फ्लूएंजा आदि नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति बोलने में हकलाता है तो उसे बार-बार शंख फूँकने दिया जाय। हकलाना कम हो जायेगा।

● मूर्ति पूजा क्यों करें ?

मन की चंचलता को रोकने का एकमात्र साधन है मूर्तिपूजा। चंचल मन यदि बिना मूर्ति के स्थिर नहीं हो पा रहा है तब मूर्ति पूजा के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं है। एकलव्य ने द्रोणाचार्य को गुरु मानकर उनकी मिट्टी की प्रतिमा बनाकर बाण-विद्या सीखा।

● भगवान को प्रसाद क्यों चढ़ाते हैं ?

प्रभु की कृपा से जो कुछ भी अन्न-जल हमें प्राप्त होता है उसे प्रभु का प्रसाद मानकर प्रभु को अर्पित करना, कृतज्ञता प्रकट करने के साथ मानवीय सद्‌गुण भी है। भगवान को भोग लगाकर ग्रहण किया जाने वाला अन्न दिव्य माना जाता है।

- **देवताओं की दाढ़ी-मूंछे नहीं होती क्यों ?**

क्योंकि देवता सदैव युवा रहते हैं। तेजोमय आभामण्डल से आलोकित दिव्य शरीरधारी होते हैं। उन्हें वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं आती। देवगण सदैव सोलह वर्षीय युवा दिखायी देते हैं।

- **देवता किसे कहते हैं ?**

जिसमें अलौकिक वस्तु देने की सामर्थ्य हो तथा जिसमें दिव्य गुण हो वह देवता है।

- **लक्ष्मी को चंचला कहा जाता है क्यों ?**

चंचला अर्थात् जिसका मन चंचल हो। लक्ष्मी जी को चंचला कहने का तात्पर्य यह है कि कहीं एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती। रुपये-पैसों का उदाहरण ले लें—आज जो नोट हमारे पास है कल तुम्हारे पास होगा वही नोट परसों और के हाथ में होगा।

- **बड़ा कौन होता है ?**

उम्र में बड़ा होनेवाला व्यक्ति आदरणीय है। यह शूद्रों के लिए उपयुक्त कहा गया है, धन-सम्पत्ति से परिपूर्ण वैश्य में बड़ा माना गया है। क्षत्रियों में जो पराक्रमी, बलवान या सिंहासन पर विराजने वाला व्यक्ति बड़ा माना जाता है किन्तु ब्राह्मणों में विद्वान, ज्ञानवान और धर्म शास्त्रों का ज्ञाता है वह बड़ा माना जाता है।

- **धर्म की दृष्टि में पितातुल्य होता है क्यों ?**

मंत्र को शिक्षा देनेवाले गुरु पिता तुल्य माने गये हैं ।

- **वृद्ध कौन हैं ?**

आयु अधिक होने और सिर के बालों के सफेद हो जाने से कोई वृद्ध (बूढ़ा) नहीं हो जाता। वृद्ध वह है जिसने वेदों को पढ़ा और समझा है।

- **बालक किसे कहते हैं ?**

जो अल्पज्ञानी या अज्ञानी होते हैं। वे सभी बालक की श्रेणी में आते हैं।

- **आस्तिक और नास्तिक में क्या अंतर है ?**

वेद वर्णित ईश्वरीय सत्ता में विश्वास करनेवाला 'आस्तिक' की श्रेणी में पाता है इसके विपरीत आचरण वाले को 'नास्तिक' कहते हैं अर्थात् वेदों की निन्दा करनेवाले नास्तिक कहे जाते हैं।

- **प्रातःकाल हाथ (कर) का दर्शन क्यों करते हैं ?**

शास्त्रों में कहा गया है—"**कराग्रे वसति लक्ष्मीः, कर मध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्द, प्रभाते कर दर्शनाम्॥**"

हाथ के अग्र (आगे) भाग में लक्ष्मी निवास करती है, हाथ के मध्य में सरस्वती और मूल में गोविन्द भगवान का निवास होता है इसलिए प्रातःकाल हाथ का दर्शन करना चाहिए

और जीवन में धन, ज्ञान एवं ईश्वर को प्राप्त करना मानव (मनुष्य) के हाथ में है। अतः प्रातःकाल हाथ को दर्शन करना चाहिए।

- **प्रातःकाल किन वस्तुओं का दर्शन करना अशुभ होता है ?**

दुराचारिणी स्त्री, एक आंख का काना, नंगा, पापी व्यक्ति, विधवा स्त्री का प्रातःकाल दर्शन करना अशुभ माना गया है।

- **इसका वैज्ञानिक कारण क्या है ?**

प्रातः काल देखने योग्य और न देखते योग्य वस्तुओं का विचार मनोविज्ञान पर निर्भर होता है जिसका दिन भर मन मस्तिष्क पर प्रभाव बना रहता है।

- **पुण्य क्या है ?**

दूसरों को कष्ट देना, शारीरिक अथवा मानसिक रूप में प्रताड़ित करना ही पाप है ।

- **मनुष्य को किन अवस्थाओं में मौन (चुप) रहना चाहिए ?**

भोजन के समय, दातुन करते समय व्यक्ति को चुप रहना चाहिए, मूत्र उत्सर्ग करते समय, श्राद्ध काल में।

- **शौच एवं लघुशंका के समय क्या मौन रहना आवश्यक है? यदि हाँ ! तो क्यों ? वैज्ञानिक कारण भी बतायें।**

धार्मिक दृष्टि में शौच और लघुशंका (मूत्र उत्सर्जन) के समय मौन रहना चाहिए। वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर शौच एवं लघुशंका के समय बोलना, खांसना, हांफना हानिकारक है क्योंकि मल के दूषित कीटाणु मुख के माध्यम से शरीर में प्रवेश करके आपको रोगग्रस्त बना सकते हैं।

- **हिन्दू लोग पूजा पाठ आदि शुभ कार्य पूर्व दिशा की ओर मुख करके क्यों करते हैं ?**

सूर्य को हिन्दू धर्म के लोग प्रधान देवता के रूप में मानते एवं पूजते हैं। सूर्य पूर्व दिशा में उदित होते हैं। वेद भी पूर्वाभिमुख होकर पूजा पाठ करने की आज्ञा देते हैं।

- **पूर्वाभिमुख होकर पूजा करने का क्या कारण है ?**

कहा गया है कि उगते सूरज को सभी नमस्कार करते हैं। उगता हुआ सूर्य उन्नति और निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। ऊंचा उठने का संदेश छिपा होता है उगते हुए सूर्य में।

- **भारतीय संस्कृति में नारी के स्थान का विवेचन करें।**

भारतीय संस्कति में नारी को बहुत ही उत्तम स्थान प्राप्त है जबकि अन्य देशों में नारी (स्त्री) को सिर्फ भोग और विलास की सामग्री समझा जाता है किन्तु हमारे भारत देश में नारी को गौरवमयी कहकर सम्मानित किया जाता है। वेदों में प्रथम शिक्षा 'मातृ देवोभवः' से प्रारंभ किया जाता है अर्थात् माता देवताओं के समान होती है। प्रार्थना के समय भी उच्चारित किया जानेवाला शब्द माता को सम्बोधित करता है–'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'

अर्थात माता का स्थान पिता से भी उच्च है। मातृशक्ति का स्मरण ईश्वर (प्रभु) से पहले होता है अर्थात् जैसे राधेकृष्ण, गौरी शंकर या गिरजापति, राधेश्याम, सीताराम आदि। मनुस्मृति अध्याय 3/श्लोक 56 के अनुसार–'यत्रनार्थस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'।

अर्थात् जिस घर में स्त्रियों का सम्मान होता है उस घर की स्थिति स्वर्ग के समान हो जाती है। वहाँ देवताओ का निवास होता है और स्त्रियों के लिए पति सेवा ही सर्वश्रेष्ठ है। स्त्रियों को किसी गुरु की आवश्यकता नहीं होती। पति के चरणों की सेवा में ही उन्हें भगवान के दर्शन होते हैं।

● तुलसी के पौधे को लोग घर के आंगन में क्यों लगाते हैं ?

तुलसी का पौधा हिन्दू परिवार की एक पहचान और तथा साथ ही उनकी धार्मिकता एवं सात्विक भावना का परिचय भी देता है। हिन्दू स्त्रियाँ तुलसी पूजन अपने सौभाग्य एवं वंशवृद्धि की कामना से करती हैं। रामायण कथा में वर्णित प्रसंग के अनुसार रामदूत हनुमान जी सीता का पता लगाने जब समुद्र लांधकर लंका गये तो वहाँ उन्होंने एक घर के आंगन में तुलसी का पौधा देखा। जो कि विभीषण का घर था तात्पर्य यह कि तुलसी पूजन की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है।

● तुलसी पूजन की क्या वैज्ञानिक अवधारणा भी है ?

तुलसी की पत्तियों में संक्रामक रोगों को रोकने की अद्भुत शक्ति निहित होती हैं। तुलसी एक दिव्य औषधि का वृक्ष है। इसके पत्ते उबालकर पीने से सर्दी, जुकाम, खांसी एवं मलेरिया से तुरन्त राहत मिलती है। तुलसी कैंसर जैसे भयायन रोग को भी ठीक करने में सहायक है। अनेक औषधीय गुण होने के कारण इसकी पूजा की जाती है।

● मुसलमान भाई पश्चिम दिशा की ओर मुख करके नमाज अदा करते हैं। क्या इसका कोई विशेष कारण है ?

मुसलमानों में कावा (खुदा) का घर पश्चिम की ओर मानते हैं, इसलिए मुसलमान भाई पश्चिम की ओर मुंह करके नमाज अदा करते हैं उनकी मस्जिदें भी ऐसे ही ढंग से बनायी जाती है। इसमें कोई वैज्ञानिक कारण नहीं है।

● मुस्लिम भाई चांद की अदा क्यों करते हैं ईद के दिन चांद देखकर ही अन्न जल ग्रहण करते हैं। ऐसा क्यों ?

वैसे ही सामान्यत: हिन्दू धर्म की मान्यताओं के विपरीत ही मुस्लिम लोग कार्य करते हैं। हिन्दू लोग सूर्वोपासना करते हैं तो मुस्लिम चांद को पूजते हैं।

● धार्मिक कार्य जैसे पूजा-आराधना, जप या अनुष्ठान करते समय हिन्दू लोग आसन बिछाते हैं क्यों ?

धर्म शास्त्र के वचनानुसार आसन के बिना पूजा पाठ आदि कृत्य करना निरर्थक सिद्ध होता है। खाली भूमि पर बैठकर पूजन करने से दु:ख, लकड़ी पर बैठकर पूजन करने से दुर्भाग्य, बांस पर दरिद्रता, कपड़े पर बैठने से तपस्या की हानि, पत्थर पर बैठकर पूजा पाठ

करने से रोग का आगमन होता है। उपरोक्त कारणों को ध्यान में रखकर विशेष प्रकार से आसनों का विधान बना।

● आसनों के बिछाने का कोई वैज्ञानिक कारण हो तो वह भी स्पष्ट करें?

पूजा पाठ करने से मनुष्य में एक विशेष प्रकार की शक्ति का संचार होता है वह शक्ति 'लीक' होकर 'अर्थ न हो जाये इसलिए पूजा करने वाले और भूमि के बीच विद्युत कुचालक के रूप में आसनों का प्रयोग करते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने कुशासन को तथा व्याघ्रधर्म, मृगचर्म को आसनों में सर्वश्रेष्ठ कहा है। आप स्वयं अनेक तस्वीरों में भगवान शिवजी को व्याघ्रचर्म आसन पर समाधिस्थ अवस्था मे देख सकते हैं।

● भाभी को 'सिस्टर-इन-लॉ' कहना उचित नहीं है क्यों ?

अंग्रेजी में 'सिस्टर-इन-लॉ' का अर्थ साली भी होता है और भाभी भी। साली से लोग अच्छा खासा हंसी मजाक भी करते हैं। मुहावरे आदि में लोग 'साली को आधी घरवाली' भी कहते हैं। पत्नी का स्वर्गवास हो जाने पर साली से विवाह किया जा सकता है किन्तु भाभी से नहीं। क्योंकि हिन्दू धर्म में बड़ी भाभी माता के समान पूज्यनीय होती है अतः अंग्रेजी के 'सिस्टर-इन-लॉ' शब्द का प्रयोग करके भाभी के सम्माननीय रिश्ते और भारतीय संस्कृति को गाली न दें।

● 'माँ' को 'मदर' या 'मम्मी' न कहें क्यों ?

'मदर' शब्द अंग्रेजी भाषा में ईसाईयों द्वारा प्रचलित किया गया है। ईसाइयों के धर्म चर्च स्थल में जो महिला रहती है उसे 'मदर' कहते हैं। एक ऐसी स्त्री जो अपने पति को अपना सर्वरत समझती है, उसके गर्भ से उत्पन्न संतान अपनी जननी को 'मदर' कहे तो शोभा नहीं देता। 'माँ' शब्द में जो लगाव, जो चाहता है और प्यार छलकता है वह ममता 'मदर' शब्द में ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा। मम्मी अंग्रेजी शब्द है । जिसका अर्थ होता है—मसाला लगाकर सुरक्षित रखा गया मृतक शरीर। अतः माँ को 'मम्मी' न कहें।

● अपने पिता को 'डैडी' या 'डैड' कहकर संबोधित न करें। यह शब्द जिन्दा इंसान को मार डालने के समान है ऐसा क्यों ?

पूर्व समय में लोग अपने पिताजी को पिताजी कहकर सम्बोधित करते थे। समय के बदलाव के साथ लोग फैशन की ओर अंधाधुंध भागने लगे। कुछ समय बाद पिताजी से 'पापा' हुए फिर पापा से डैड और आधुनिक फैशन परस्त जिन्दगी में डैडी से 'डैड' हो गये। 'डेड' होने का मतलब आप समझ गये होंगे। 'डेड' अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ होता है 'मर गये'। मैं अपने उन फैशन परस्त युवाओं को (लड़की या लड़का दोनों को) सम्बोधित करके कहना चाहता हूँ कि इस जानकारी के बाद अपने पिता को 'डैडी' या 'डैड' कहना छोड़ दें। पिता जी कि आदरणीय होते हैं, उन्हें सम्मान-जनक शब्दों से सम्बोधित करें।

- **हिन्दू धर्म में मृतक के परिजन उसके शव को जलाते जबकि मुस्लिम धर्म के लोग शवों को दफलाते हैं। इनमें से दफनाना उचित है या शव (लाश) को जलाना उचित है क्यों ?**

एक शव (लाश) को दफनाने के लिए कम-से-कम दो गज जमीन चाहिए। इसी तरह मुस्लिम धर्म जितने भी लोगों की मृत्यु होती है उन सभी के लिए प्रत्येक को दो-दो गज जमीन चाहिए अगर इसी तरह हिन्दू लोग भी अपने शवों को दफनाने लगे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि सम्पूर्ण धरती कब्रिस्तान बन जायेगी। मुस्लिम हो या ईसाई हम किसी धर्म विशेष की बात नहीं कर रहे हैं बल्कि उन सभी से सम्बोधित है जिस धर्म के लोग शवों को दफनाते हैं। दफना देने के बाद निश्चित है लाश में सड़न उत्पन्न होंगी इस तरह वायुमंडल में हमारे शरीर को क्षति पहुंचाने वाले वायरस फैलेंगे। कब्रिस्तानों के कारण संसार की कितनी उपयोगी भूमि आज व्यर्थ हो रही और हिन्दुओं में लोग मृतक की देह को अग्नि के हवाले कर देते हैं। थोड़ी ही देर में अग्नि उस शरीर को भस्मसात कर देती है। हिन्दू एक जो गज जमीन पर लाखों शवों का दाह-संस्कार कर डालते हैं।

- **मृतक की अस्थियों को गंगा में डालने का अभिप्राय है ऐसा क्यों ?**

हिन्दुओं की धार्मिक मान्यता के अनुसार अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने से मृतक की आत्मा को शान्ति मिलती है तथा पतितपावनी मोक्ष दायिनी गंगा के पवित्र जल के स्पर्श से मृतक की आत्मा के लिए स्वर्ग का द्वार खुल जाता है।

- **उत्तर दिशा में सिर करके नहीं सोना चाहिए। क्यों ?**

क्योंकि हिन्दुओं की धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मृतक का सिर उत्तर दिशा की ओर रहता है।

- **क्या इसका कोई वैज्ञानिक पक्ष भी है ?**

वैज्ञानिक मतानुसार उत्तरी ध्रुव चुम्बकीय क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली ध्रुव है। उत्तरी ध्रुव के तीव्र चुम्बकत्व के कारण मस्तिष्क की शक्ति क्षीण (नष्ट) होती है अतः उत्तर की ओर सिर करके कदापि न सोयें।

- **मृतक का सिर उत्तर दिशा की ओर क्यों रखते हैं ?**

मृत्यु काल के समय प्राणी (मनुष्य) को उत्तर की दिशा करके इसलिए लिटाते हैं कि प्राणों का उत्सर्ग दशम द्वारा से हो। चुम्बकीय विद्युत प्रवाह की दिशा दक्षिण से उत्तर की ओर होता है। कहते हैं कि मरने के बाद भी कुछ क्षणों तक प्राण मस्तिष्क में रहता है। अतः उत्तर दिशा में सिर करने से ध्रुवाकर्षण के कारण शीघ्र निकल जाता है।

- **मृत्यु किन दिनों में हो तो उत्तम हो और किन दिनों में मृत्यु होना निन्दनीय होता है ?**

शुक्ल पक्ष, दिन और उत्तरायण के छः महीनों में मृत्यु हो तो प्राणी की आत्मा ब्रह्मलोक

में पहुंचकर ब्रह्म में विलीन हो जाती है। जबकि दक्षिणायण के छः महीनों में जिनकी मृत्यु होती है वे चन्द्रलोक तक जाकर पुनः मृत्युलोक में जन्म लेते हैं।

- **श्री रामचन्द जी को विष्णु का अवतार मान लिया जाये तो उसी काल को में परशुराम श्री विष्णु के अवतार के रूप में अवतरित हुए और सीता स्वयं में उनके मध्य वार्ता भी हुई। भगवान विष्णु का एक समय में दो रूप में अवतार कैसे हुआ ?**

श्रीराम और परशुरामजी को एक ही समय अवतरित होना कोई आश्चर्य की बात नही है। एक प्रसंग आपने महाभारत काल का सुना या पढ़ा होगा कि जब युधिष्ठिर की ओर से भगवान श्रीकृष्ण शान्ति स्थापना हेतु शान्ति दूत बनकर गये तो अभिमान वश दुर्योधन ने कहा–पकड़ लो इस ग्वाले को। जाने ने पाये। उसे समय दुर्योधन का आदेश पाकर जब सारे दरबारी श्रीकृष्ण को पकड़ने दौड़े तो उन्हें अनेकों कृष्ण दिखायी देने लगे। उसी तरह भगवान के एक दो नहीं बल्कि आवश्यकतानुसार अनेक अवतार हो सकते हैं।

- **पुजा पाठ में अनेक स्थान पर ऐसे आदेश निर्देश मिलते हैं यह वस्तु इस देवता पर चढ़ायें या इस देवता पर न चढ़ाये ऐसा क्यों? जबकि सारी वस्तुएँ परमात्मा द्वारा ही प्रदान की गयी है।**

वोडषेपचार पूजन आदि में ऐसा विधान है। विष्णु जी को अक्षत (चावल) नही चढ़ाये जाते। तुलसी पत्र ही चढ़या जाता है क्योंकि तुलसी विष्णु जी की पत्नी है अतः उनका सानिध्य प्राप्त करने हेतु तुलसी पत्र चढ़ाया जाता है। शिवजी पर कमल पुपय नहीं अपितु विल्वनत्र (बेल पत्र) चढ़ता है। आयु, वृद्धि, आयेग्यता के लिए'–'ॐ त्र्यबेकं यजामहे' आदि मंत्र से त्रिनेत्रधारी भगवान शिवजी का उपासना की जाती है और तीन पतों वाला विल्पवत्र चढ़ाया जाता है। इसी तरह दुर्गा जी को कनेर का पुष्प सूर्यदेप को जवाकुसुम और गणेश का दुर्वा (दूब) चढ़ाना चाहिए। कमल पुष्प भगवान शिवजी द्वारा शापित है इसलिए कमल पुष्प और उसके परागों के मिश्रण से बना 'कुंकम्' शिवलिंग पर नहीं चढ़ाये जाते।

- **'सनातन धर्म' का क्या अर्थ है?**

जो सृष्टि एवं ईश्वर को अनादि, अनन्त और सनातन मानते है जो लोग हैं। जो यह मानते हैं कि उनके धर्म, शिक्षा उपदेशों और अवतारों का कोई आदि अन्त नहीं है वे 'सनातनी' कहलाये। उनकी धर्म किसी पैगम्बर या अबतार द्वारा संचालित नहीं है। यदि भगवान, शिव, विष्णु, श्रीराम या कृष्ण ने कहीं सनातन धर्म का उपदेश किया है तो इसका अर्थ सही है कि सनातन धर्म उनके अवतरित होने से पहले विद्यमान तथा अर्थात् 'सनातन धर्म' का आदि अन्त नही है।

- **वर्ण व्यवस्था जन्म जात होती है। अथवा संस्कार के अनुसार।**

सामान्य तौर पर वर्ण–व्यवस्था जन्म–जात होती है किन्तु कुछ विद्वानों का कथन है कि व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है (क्योंकि कमर के नीचे का भाग शूद्र की श्रेणी मे आता है और प्रत्येक मनुष्य का जन्म कटि के नीचे से ही होत है) संसरों के फलस्वरूप उसमें ब्राह्मणत्व, क्षत्रीयत्व अथवा अन्य कोटि का भाव आता है किन्तु जन्मगत विशेषताओं को भी नकारा नहीं जा सकता क्योंकि बहुत पुरानी कहावत है कि 'खून, अपने खून' (पुत्र, भाई आदि से ताप्पर्य) को अपनी ओर खींचता है। वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकारते हैं कि वीर्य (बीज) में निहित वंशागत गुण धर्म पुत्र में पाये जाते हैं। बाहरी संस्कारों में थोड़ा बहुत परिवर्तन लाया जा सकता है किन्तु बालक में उसके माता–पिता के गुण विशेष रूप मे विद्यमान रहेंगे।

- **दुध के साथ दही नहीं खाना चाहिए। आखिर क्यों ?**

दुध एवं दही की तासीर अलग–अलग है इसलिए इसे एक साथ नहीं खाना चाहिए। यदि खाते हैं तो हमें एसीडिटी हो सकती है एवं पेट में गैस, अपच हो सकती है। दोनों के अंतराल कम से कम 2 घंटे का होना चाहिए।

- **दुध के साथ मछली नहीं खाना चाहिए। आखिर क्यों ?**

दूध का तासीर ठंडी है एवं मछली का तासीर गर्म है। इसलिए दोनों को एक साथ नहीं खाना चाहिए। इसे पेट में गैस एवं एलर्जी तथा चर्मरोग उत्पन्न हो सकती है।

- **दुध के साथ नमकीन नहीं खाना चाहिए। आखिर क्यों ?**

दूध में प्रोटीन, विटामिन, मिनरल आदि पाया जाता है। इसके साथ नमक मिलाने से प्रोटी जम जाता है और पौष्टिकता नष्ट हो जाती है। इसलिए दूध एवं नमकीन एक साथ नहीं खाना चाहिए।

धार्मिक दृष्टि में अंकों का महत्व :

- **एक का क्या अंकों का महत्व।**

ईश्वर एक है।

- **दो का क्या अर्थ है?**

ईश्वर और जीव के मिलने से सृष्टि बनी।

- **'तीन' का क्या तात्पर्य है?**

तीन लोक मान गये हैं–स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक, पाताल लोक।

- **'चार' का धार्मिक दृष्टि में क्या अर्थ हैं ?**

वेद चार हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

- **'पांच' का अर्थ समझायें।**

तत्व पाँच होते हैं–क्षिति (पृथ्वी), जल, पावक (अग्नि) गगल (आकाश), समीर (वांयु)।

- **'छः' का क्या तात्पर्य है?**

छः का अर्थ ऋतुओं से होता है। एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं–वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमत, शिशर।

- **'सात' अंक का क्या तात्पर्य है?**

'सात' अंक का तात्पर्य संगीत के सात सुरों से हैं–या, रे, ग, म, प, ध, नी तथा वैज्ञानिक वृष्टि से सूर्य की किरणों में सात रंग होते हैं।

- **'आठ' का अर्थ समझाइये।**

एक दिन और एक रात में आठ पहर होते हैं।

- **'नौ' का क्या अर्थ है?**

नौ का अर्थ 'नवधा-भक्ति' से लिया गया है।

- **'दस' का तात्पर्य क्या है?**

दिशाओं से 'दस' अंक का सम्बन्ध हैं दिशाएं दस होती हैं–पूरब, पशिचम, उत्तर, दक्षिण, आकाश, पाताल, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, आग्नेय। इनके अलावा दिग्पाल भी दस होते हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं–इन्द्र, यम, कुबेर, वरूण, ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, अग्नि, नैतृत्व और पवन।

- **खूनी बवासीर नाशक नुस्खा क्या है ?**

बेल का गूदा कच्चा 10 ग्राम, सौंठ 10 ग्राम तथा सौंफ 10 ग्राम कूट-पीस कर 3 गिलास पानी पानी डालकर काढ़ा बनाएँ। जब एक चौथाई भाग शेष बचे तब छानकर रात को सोने से पहले यह काढ़ा पी लें।

- **गैस नाशक नुस्खा क्या है ?**

सज्जीखार व पुराना गुड़ बराबर मात्रा में लेकर कूटकर एक सार कर लें। दोनों को मिलाकर चने के आकार की गोलियाँ बनाकर रख लें। नित्य सुबह-शांम एक या दो गोली सेवन करने से पेट में गैस बनना बन्द हो जाती है।

● मनुष्य को मांस खाना चाहिए अथवा नहीं खाना चाहिए?

मनुष्य के पास न तो मांसाहारी दाँत है और न ही आँत। कहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य जाति प्राकृतिक रूप से शाकाहारी है किन्तु अपनें जीभ का स्वाद बदलने के लिए लोग मांसाहारी व्यंजन खाते हैं। वस्तुतः जो जीभ से चिपकाकर पानी पीने वाले जीव हैं, वास्तव में मांस का भोजन उनके लिए हैं। प्रकृति ने मांस नोचने के लिए उन्हें नुकीले दाँत और मांस को पचाने के लिए आंत प्रदान किये हैं। जैसे कुता, बिल्ली, शेर बाघ आदि और घूंट-घूंटकर पानी पीने वाले जीव शाकाहारी होते हैं। ज़ैसे:- गाय, भैंस, बन्दर, मनुष्य आदि। मांसाहारी से जीवहत्या को प्रोत्साहन मिलता है जो हमारी संस्कृति, सभ्यता एवम् धर्म के अनुकूल नहीं है।

● व्रत-उपवास रखने का धार्मिक एवम् वैज्ञानिक कारण बताइये। व्रत-उपवास रखने से क्या होता है?

धार्मिक विचार धारा के अनुसार देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए व्रत-उपवास रखना चाहिए। देवी-देवता प्रसन्न होने पर भक्त को मनोवाछित फल प्रदान करते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपवास रखने का कारण यह है कि 'अन्न' में एक प्रकार का नशा होता हैं, मादकता होती है। भोजन करने के बाद आप स्वयं अनुभव करते होंगे कि 'आलस्य' आता है। कभी-कभी पेट में गैस, या खट्टी डकार आने जैसा विकार भी उत्पन्न हो जाता है। उपवास। आज के अत्याधुनिक फैशन परस्त युग में लोग 'डायटिंग' भी करते हैं। मोटापा कम करने के लिए भी लोग उपवास व्रत रखते हैं।

● हिन्दुओं के हजारों तीर्थ स्थल में किन्तु धाम केवल 'चार' हैं। क्यों?

हिन्दू धर्म में चार वेद हैं:- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। ये चार वेद ही हिन्दू संस्कृति के आधार हैं तथा वर्ण भी चार हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। चार वर्णो की जीवनचर्या का विीाजन चार भागो में हुआ है जिसे आश्रम कहते हैं-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवम् सन्यास। पुरूषार्थ भी चार माने गये हैं- अर्थ, धर्म, काम, और मौक्ष। दिशाएं दिशाएं भी चार हैं। इन चार दिशाओं के अनुपात में 'चार-धाम' हैं पूर्व की ओर जगन्नाथ धाम, पश्चिम में द्वारिका, उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में रामेश्वरम्। ये चारों धाम, चार वेदों के प्रति हैं- बद्रीनाथ जी यजुर्वेद के प्रतीक, रामेश्वरम् जी ऋग्वेद के द्वारिकाधीश सामवेद के तथा अथर्ववेद के प्रतीक भगवान जगन्नाथ जी हैं।

● हिन्दू लोग पूजा-पाठ या अन्य शुभ अवसरों पर स्वस्तिक (卐) का चिन्ह क्यों बनाते हैं। इसका, क्या रहस्य है?

स्वस्तिक चिह्न केवल हिन्दुओं में ही प्रचलित है अन्य धर्म सम्प्रदाय के लोग भी इसे पवित्र मानते हैं। ईसाइयों में पवित्र क्रास को लोग गले में धारण करते हैं तथा स्वस्तिक को

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो 'धन-आवेश' के रूप में समझ सकते हैं। धन आवेश अर्थात् (Possive point) दो ऋणात्मक शक्ति प्रवाहों के मिलने से धनात्मक आवेश Plus (+) बना। यह स्वस्तिक का अपभ्रंस ही है। ईसाइयों का क्रॉस है विच्छेद करने पर शब्द मिलता है- करि + आस्य जिसका अर्थ होता है हाथी के मुखवाला। ईसाइयों के प्रसिद्ध शब्द 'क्राइस्ट' का संधि विच्छेद करने पर तीन शब्द मिलते हैं – कर + आस्य + हष्ट इसका तात्पर्य हाथी के समान मुख वाला होता है। हाथी के समान मुख वाले अग्रपूज्य उेव गणेश जी हैं। स्वस्तिक की चार भुजाएं श्री विष्णु जी के चार हाथ हैं। स्वस्तिक चारों दिशाओं की ओर शुभ संकेत देती है। स्वस्तिक 'श्री' (लक्ष्मी) का भी प्रतीक है। भगवान विष्णु और धन सम्पति की अधि ष्ठात्री देवी का प्रतीक स्वस्तिक है। पूजा-पाठ या अन्य शुभ कर्मो के अवसर पर ब्राह्मण लोग शुभत्व की प्राप्ति के लिए 'स्वस्तिवाचन' करते है।

● लक्ष्मी कहाँ रहती है?

व्यावहारिक एवम् वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो गंदगी वाले स्थाने या गंदे मनुष्य से लक्ष्मी सदैव दूर रहती है। अधिक भोजन करने वाला, गंदे कपड़े पहनने वाला, आलसी, दिन में सोने वाल व्यक्ति लक्ष्मी से हीन हौता हैं। इसलिए कि जो कर्महीन होगा, आलसी होगा, या गंदगी से भरा होगा भला उसके पास लक्ष्मी (रूपया) कहां से आयेगी। महाभारत में लक्ष्मी जी ने रूक्मिणी से कहा कि हे सरवी! कलहप्रिय, निन्दक, मलिन, असावधान और निर्लज्ज लोगों के पास मैं नही ठहरती । जो कलहप्रिय (कलह करने वाले) होते हैं। दूसरों की निन्दा करते हैं। उनके पास कर्म करने के लिए समय ही नहीं होता । कर्म न करने की स्थिति आगे बढ़ने के मार्ग स्वत: ही बन्द हो जाते हैं। आलसी व्यक्ति रोगी हो जाता है। उसी तरह असावधान व्यक्ति खाकर पछताते रह जाते हैं।

● बिल्ली रास्ता काट देती है तो वापस लौट जाते हैं। इसके पीछे मनोवैज्ञानिकता क्या है?

बिल्लीयों को डायन का प्रतिरूप माना गया है। यदि किसी के घर में दो बिल्लियाँ आपस में लड़ रहीं हैं तो यह जानिये कि शीघ्र ही घर में कलह उत्पन्न होने वाला है। बिल्लियों का रोना घर में किसी के मरने की पूर्व सूचना देती है। अमंगलकारी राहु की सवारी बिल्ला है। कहा जाता है कि क्या तुम्हारे ऊपर राहु की दृष्टि है जो दिन पर दिन सूखे जा रहे हो। तात्पर्य यह कि बिल्ली पूर्णत: अशुाि सूचक है।

● यदि राम और कृष्ण को परमात्मा मान लिया जाये तो जब इन्होंने पृथ्वी पर अवतार ग्रहण किया उस समय समस्त संसार, ईश्वर विहीन हो गया। स्पष्ट करें।

इसी पुस्तक में पहले बताया जा चुका है कि परमात्मा एक होते हुए भी अनेक हैं फिर वे सर्वव्याप्त भी हैं। एक स्थान पर अवतार लेने का अर्थ यह नहीं कि संसार ईश्वर शून्य हो गया। वे अपने अंश से सर्वत्र उपस्थित रहते हैं।

● चेचक एक भयंकर रोग है, फिर इसे शीतला माता क्यों कहते हैं?

चेचक के उपचार हेतु वैज्ञानिक एवम् डाक्टरों ने बहुत बल दिया। इनके कथानानुसार चेचक विषाणुजनित (VIRUS) रोग है इसका इलाज औषधियों से हो सकता है वे पूर्णतः

सफल नहीं हुए क्योकि जिस प्रकार कपड़ो में लगी मैल को साबुन धो डालता है। किन्तु 'काई' को नही छुड़ा पाता किनतु यदि कोई मूर्ख तेजाब से कपड़े की काई को निकालने का प्रयास करता है तो परिणाम स्वरूप कपड़ा ही नष्ट हो जाता है उसी प्रकार कोई डाक्टर दवाओं द्वारा चेचक के रोगी क इलाज करता है तो वह रोगी के जीवन के साथ मजाक करता है। चेचक का रोग शरीर के अन्दरूनी भाग से पूरे शरीर पर एक साथ प्रकट होता हैं। ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमरी, वैष्णवी वाराही, इन्द्राणी एवम् चामुण्डा-ये सात माताएँ हैं। इनमें चामुण्डा का स्वरूप सबसे घतक होता है। सात स्टेज वाले इस रोग में प्रथम स्टेज की देवी ब्राह्मी है। चौथे स्टेज तक कोई खतरा नहीं रहता अर्थात् वैष्णवी तक जातक के प्राण जाने का भय नहीं होता किन्तु उसके बाद जीवन खतरे में पड़ जाता है। कौमारी में एक बार विस्फोट होता है जो नाभि तक दिखायी देता है। वाराही का आक्रमण मन्द गति से होते है अतः इस 'मन्थज्वर' भी कहते हैं। तथा चामुण्डा के आक्रमण से रोगी की दुर्गति हो जाती है। जीभ, आंख, नाम, मुंह आदि पर पूरा प्रकोप होता है। रोगी अन्धा, लूला, लंगड़ा भी हो जाता है। चामुण्डा से आक्रान्त रोगी शव (लाश) के समान हो जाता है । गधे पर सवार, हाथ में झाड़ू लिये हु नग्न रूप (–) धारी शीतला माता को मैं नमस्कार करता हूँ।

● खांसी ठीक कैसे करें ?

जब रोगी को छाती में कफ जमा होने के कारण खांसी आ रही हो और सूखी खांसी की अधिकता हो तो तालिसादि चूर्ण 20 ग्राम और शुभारम्भ 10 ग्राम मिलाकर 20 पुड़िया बना लें। 1-1 पुड़िया सुबह-साम शहर के साथ लेने से लाभ होता है।

● दांत दर्द कैसे ठीक करें ?

शुभ्रा भस्म, सेन्धा नमक, नवसादर, सांभर नमक सभी 10-10 ग्राम लेकर इसमें 5 ग्राम नीलाथोथा चूर्ण मिलाकर सभी का बारीक कपड़छन चूर्ण बनाकर इसमें 10 ग्राम सरसो का तेल मिलाकर रख लें। इसे दांतों पर मलने से दांत का दर्द, मसूढ़ों का दर्द पायोरिया जैसे रोग में लाभ मिलता है तथा दांत मजबूत होते हैं। फिटकिरी को पानी में घोलकर कुल्ला करने से भी दांतों की सफाई होती है व रोग दूर होते हैं। दांत में छेद व दर्द हो तो फिटकिरी को रूई में रखकर छेद में दबाकर लार बाहर टपकाने से भी दर्द में राहत होती है।

● श्राद्ध आश्विन मास में ही कयों ?

आश्विन मास में पितृ-पक्ष (पितर पक्ष) हमारे सामाजिक उत्सवों में पितरों का सामूहिक महापर्व हैं। इस समय सभी पितर अपने पृथ्वी लोक स्वामी सगे-सम्बन्धियों के घर बिना बुलाये आते हैं और 'कव्य' ग्रहण करके परितृप्त होते हैं तथा अपना शुभ आशीर्वाद उन्हें प्रदान करते हैं।

● सूर्य के रथ को सात घोड़े खींचते हैं। ऐसा लोगों का विचार है। इन सात घोड़ों का वैज्ञानिक रहस्य क्या है?

न तो सूर्य के पास कोई रथ और न तो उस रथ को सात घोड़े खींचते हैं। सौर मण्डल मे अपनी धुरी पर परिक्रमा करना ही सूर्य की गति है। सूर्य हमसे बहुत दूर है उसकी किरणें

ही हम तक पहुंचती है। सूर्य की ये सप्तवर्ण किरणों को ही हिन्दू धर्म ने अलंकारिक भाषा में सूर्य के सात घोड़ों की उपाधि दी है।

● देवताओं में सर्वश्रेष्ठ और अग्र पूज्य गणेश जी माने गये। क्यों ?

अनेक लोगों का यही प्रश्न होता है कि अनेक सुन्दर और शक्तिशाली देवाता हैं। सूर्य हमें रोशनी देते हैं, इन्द्र देव पानी बरसाकर अन्न उपजाने में सहायता करते हैं। जीवन-धारियों के प्राण रक्षक पवन देव हैं फिर गणेश जी की प्रथम पूजा क्यों होती है?

एक पौराणिक कथा के अनुसर प्राचीन काल में एक बरा देवताओ की सभा हुई और उनके मध्य यह प्रसंग उठा कि सबमें श्रेष्ठ कौन है? सभी दवता अपने–अपने को श्रेष्ठ समझ रहे थे। इस तरह निर्णय न हो सका । अन्ततः निश्चित हुआ कि जो तीनों लोकों की सबसे पहले परिक्रमा करके इस थान पर पहुँचगा वहीं सर्वश्रेष्ट एवम् प्रथम पूज्य होगा। यह सुनकर सभी देवता अपने तीव्रगामी वाहनों पर सवार होकर तीनों लोकों की परिक्रमा करने चल पड़े किन्तु भारी भरकम शरीर वाले गणेश जी अपने वाहन मूषक (चूहे) के साथ वहीं रह गये किन्तु उन्होंने अपने साहस नहीं खोया। वे वहाँ से चलकर उस स्थान पर गये जहाँ उनके माता–पिता (शिव–पार्वती) बैठे हुए थे। उन्होंने माता–पिता की तीन बार परिक्रमा किये और जाकर सभापति के आसन पर बैठ गये। सर्वप्रथम मयूर (मोर) पर आरूढ़ कार्तिकेय जी तीनों लोकों की परिक्रमा करके पहुंचे और सभापति के आसन पर विराजमान गणेश को लड्डू खाते हुए देखकर क्रोधित होकर अपने मुग्दर का प्रहार उनके दाँत पर किया। गणेश जी का एक दाँत टूट गया । तभी से वे एकदन्त होगये। तत्पश्चात् गणेश जी सभी देवताओं के समक्ष तर्क प्रस्तुत किया कि तीनों लोकों की सुख–सम्पदा छोड़कर लोकों का भ्रमण करता है उसका सार परिश्रम व्यर्थ चला जात है। वस्तुतः गणेश जी में जो विशषताये हैं यदि मानव उन्हें ग्रहण कर ले ते वह भी अपने समाज में प्रथम–पूज्य बन जायेगा। भगवान गणेश का विशाल मस्तक हमें लाभदायी विचार ग्रहण करने की प्रेरणा देता है ।उनके बड़े–बड़े कान उत्तम विचारो को सुनने की प्ररणा देते हैं। नीचे की ओर लटकी नाम (सूंड) खतरों को सूँघने की प्रेरणा देती है। एक दाँत से वचने बद्धता तथा छोटी आँखें ध्यान मग्नता की ओर संकेत करती हैं। मोटा पेआ पाचन शक्ति और धैर्यता का प्रतीक है। विघ्नों के विनाश हेतू हाथ में परशु तथा मान व कल्याण के लिए वरद मुद्र धारण किये हैं। ये गुण अन्य देवता में नहीं है।

● 'शुचि' का क्या अर्थ है?

धार्मिक दृष्टि से शुचि का अर्थ पवित्रता से है।

● 'अशुचि' क्या है?

अपवित्र वस्तु को अशुचि कहते हैं।

● शचिता औश्र स्वच्छता में अन्तर बताइये।

अन्तःकरण की पवित्रता का अर्थ शुचिता से है जबकि जगत की वस्तु को स्वच्छता से तुलना करते हैं।

● अनन्त का अर्थ समझाइये।

जिसका कोई अन्त न हो उसे अनन्त कहते हैं उदाहरण स्वरूप परमात्मा अनन्त है।

● जड़ किसे कहते हैं?

जिसका चेतनता नहीं होती तथा प्राण विहीन (वायु रहित, प्राण वायु) होता है। उसे जड़ कहते हैं, यथा-जल, मिट्‌टी आदि।

● स्थूल का क्या अर्थ है?

अध्यात्मिक दृष्टि से दिखायी देने वाली वस्तु स्थूल कहलाती है।

● सूक्ष्म किसे कहते हैं?

जो दिखायी न दे किन्तु उसकी उपस्थिति का आभास हो उसे सूक्ष्म कहते है।

● सूक्ष्म और स्थूल में अन्तर बताइये।

बरफी, पेड़, लड्‌डू, चीनी आदि स्थून हैं और उसमें निहित 'स्वाद रस' सूक्ष्म हैं। मनुष्य देह स्थूल है और चेतन आत्मा सूक्ष्म है।

● प्रमाण कितने प्रकार के होते हैं?

प्रमाण तीन प्रकार के माने गये हैं– अनुमान प्रमाण, प्रत्यक्ष प्रमाण और आप्त प्रमाण।

● उपराक्त प्रमाणों को विधिपूर्वक समझाइये।

जैसे किसी स्थान पर धुँआ उठ रहा है आप वहां अग्नि होने का अनुमान करेंगे क्योंकि बिना अग्नि के धुँआ उठना सम्भव नहीं है। यह अनुमान प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण के अन्तर्गत वे वस्तुँ आती हैं। जिन्हे हमारी आँखे देखती हैं, अथवा अनुभव करती है। जैसे-पुष्प में सुगन्ध है, जल में शीतलता है। ये सभी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं तथा आप्त प्रमाण ऋषि-मुनियों द्वारा कहे गये वचनों को कहते हैं जो न जाने सैंकड़ो हजारों वर्ष पूर्व कह चुके हैं और वे स्वयं इस धरती पर जीवित नही हैं। किन्तु उनके कहे गये वचनों का हम पालन करते हैं।

● ब्रह्म मुहूर्त क्या है?

रात्रि के अन्तिम प्रहर को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं। निद्रा त्याग करने का शास्त्र विहित यह समय सर्वोतम होता है।

● ब्रह्म मुहूर्त में उठने से लाभ क्या है?

ब्रह्म मुहूर्त में जागृत (जागने) होने से मनुष्य को सौन्दर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वस्थता प्राप्त होती है।

● ब्रह्म मुहूर्त में उठने से मनुष्य स्वस्थ कैसे होगा? कारण बताइये।

वैज्ञानिक शोधों के अनुसार प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में वायु मण्डल प्रदूषण रहित होता है। इसमें उस समय 40 प्रतिशत नाइट्रोजन, 4 प्रतिशत कार्बन डाईऑक्साइड होती है। कार्बन डाईआक्साइड सबसे दूषित होती है जो फेफड़ों के लिए हानिकारक है। सूर्योदय के साथ ही सड़कों पर अनेक प्रकार के वाहन चलने लगते हैं जिनसे कार्बन डाईआक्साइड निकलती

है और वायुमण्डल में प्रदूषण फैलने लगता है। जिसका मात्रा 4 प्रतिशत से बढ़कर 60 प्रतिशत तक हो जाती है। आयुर्वेद के दृष्टि कोण से ब्रह्म मुहूर्त में उठकर टहलने से संजीवनी शक्ति से परिपूर्ण मलयागिरी की ओर से आने वाली हवा शरीर को स्पर्श करके नव शक्ति का संचार करती है। इस अमृततुल्य वायु का सेवन करना अति लाभदायक हैं।

● दातुन करने के लिए कौन-सी वनस्पति श्रेष्ठ है?

आयुर्वेद के अनुसार गूलर, नीम, कीकर (बबूल), वज्रदंती, आदि वृक्षों की टहनियों का दातुन करें। नीम एक ऐसा वृक्ष है जिसकी जड़, तना , पत्तियां, छालें, आदि औषधीय गुणों से भरपूर है। कुछ लोगों का मत है कि टूथपेस्ट और ब्रश से दांतो की जितनी अच्छी सफाई होती है उतनी अच्छी सफाई दातुन से सम्भव नहीं है यह सत्य है कि ब्रुश दांतों की अच्छी सफाई करता है । वह दाँतों के मैल को अपने में भर लेता है और दूषित हो जाता है। टूथपेस्ट के बचे अवशेष के साथ पायरिया के कीटाणु ब्रुश की तली में चिपके रहते हैं फिर अगले दिन ब्रुश करते समय वे कीटाणु दांतों से चिपक जाते हैं। इस तरह टूथपस्ट-ब्रुश से ज्यादातर पायरिया होने के चांस रहते हैं। ब्रुश करने वालों को संभवतः प्रत्येक सप्ताह नया ब्रुश ले लेना चाहिए अर्थात ! एक सप्ताह से अधिक दिनों तक एक ब्रुश प्रयोग में न लायें।

● बेर की दातुन से लाभ है क्यों ?

बेर की दातुन से दांतों की सफाई तो होती है किन्तु जो व्यक्ति अपने गले में मधुरता लाने का इच्छुक हो वह नियमित रूप से बेर की दातुन प्रयोग करें।

● अपामार्ग की दातुन के लाभ क्यों ?

अपामार्ग की दातुन स्मरण शक्ति में वृद्धि करती है और मुख की दुर्गन्ध भी दूर भगाती है।

● नीम की दातुन करें क्यों ?

नीम की दातुन से एक नहीं बल्कि अनेकों लाभ हैं। प्रथम तो दाँत की सफाई होती है, दूसरा लाभ पायरिया जैसे रोगों में नीम की दातुन अति उत्तम औषधि है। नीम की दातुन से तीसरा अति प्रभावकारी लाभ यह है कि दातुन करते समय जो दातुन का रस पेट में चला जाता है तो आंत में होने वाली कीडियाँ (पिन कृमि) मर जाते हैं उन कीड़ियों के कारण पेट में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं जैसे-जैसे की समस्या, अपच आदि। अतः नीम की दातुन बहुत ही लाभकारी है।

● गूलर की दातुन से लाभ होता है क्यों ?

जिसकी जुबान लड़खड़ाती हो, बोलते समय हकलाता हो, जीभ में कालापन हो। ऐसे व्यक्तियों के लिए गूलर की दातुन फायदेमंद है।

● अक्सर पूजा-पाठ के समय ब्राह्मण लोग पूजा सुनने वाले व्यक्ति के हाथ में जल और कुश रखकर संकल्प कराते हैं यह संकल्प क्या है?

किसी कार्य के लिए शपथ ग्रहण करना, दृढ़ प्रतिज्ञ होना ही संकल्प कहलाता है। पूर्व काल में दामन भगवान जब असुरराज बलि के पास याचक बनकर गये तब उन्होंने सर्वप्रथम राजा बलि को संकल्प उठाने के लिए कहा। राजा बलि के संकल्प करने के उपरान्त वामन भगवान ने तीन डेग भूमि की याचना की थी। आत्म-विश्वास और विनम्रता पूर्वक शुभ कार्य करने को प्रेरित अनुष्ठान का नाम संकल्प हैं।

● हाथ में जल लेकर ही संकल्प क्यों करते हैं ?

जल लेकर संकल्प करने की तात्पर्य यह कि जिस कार्य के लिए में संकल्प कर रहा हूँ। यदि वह कार्य न करूँ तो मुझे जल पीने को न मिले। वेद एवम् शास्त्रों के अनुसार जल के स्वामी वरूण देव हैं। प्रतिज्ञा पालन न करने वाले को वरूण देव कठोर दण्ड देते हैं जल के बिना प्राणी का जीवित रहना असम्भव है अतः जल ही प्राण है। और इसी जल को हाथ में लेकर संकल्प करना पूर्ण वचन बद्धता होती है

● सूर्य को अर्घ्य (जल) देने का वैज्ञानिक कारण स्पष्ट करें।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सूर्य को जल दिये बिना अन्न (भोजन) ग्रहण करना पाप है। अलंकारिक भाषा में वेद कहते हें कि सन्ध्या के समय सूर्य को दिये गये अर्घ्य के जलकण वज्र बनकर असुरों का नाश करते हैं। विज्ञान की दृष्टि में से असुर कौन हैं ? मनुष्यों को प्रताड़ित करने वाले ये असुर कौन हैं ? ये असुर हैं–टायफाइड निमोनिया, राजयक्ष्मा आदि रोग जिनको नष्ट करने की दिव्य शक्ति सूर्य की किरणों में होता है। एन्थ्रेक्स के वायरस जो कई वर्षों के शुष्कीकरण से नहीं मरते वे सूर्य की किरणों से एक-डेढ़ घंटे में मर जाते हैं। हैजा, निमोनिया, चेचक आदि के कीटाणु पानी में डालकर उबालने पर नहीं मरते किन्तु सूर्य की प्रभातकालीन किरणों से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। सूर्य को अर्घ्य देते समय साधक के ऊपर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। शास्त्र अनुसार प्रातःकाल पूर्व की ओर मुख करके तथा संध्या के समय पश्चिम की और मुख करके जल देना चाहिए। जल के पात्र (लोटे) को छाती के बराबर ऊँचाई रखकर जल गिरायें ओर लोटे के उभरे भाग को तब तक देखते रहें जब तक जल न समाप्त हो जायें। ऐसा करने से आंखों में मोतियाबिन्द नहीं होता।

● माला फेरने से क्या होता है? माला फेरने का वैज्ञानिक आधार क्या है ?

माला फेरने समय अगूठे और उंगली के मध्य घर्षण से एक प्रका की विद्युत उत्पन्न होती है जो धमनियों द्वारा होकर सीधी जाकर 'हृदय-चक्र' को प्रभावित करती है जिससे चंचल मन स्थिर हो जाता है।

● संस्कार किसे कहते हैं ?

शरीर एवम् वस्तुओं की शुद्धि हेत समय-समय पर जो कर्म किये जाते हैं उन्हें 'संस्कार' कहते हैं।

● विवाह कितने प्रकार के होते हैं ?

विवाह आठ प्रकार के होते हैं–ब्रह्म, देव, आर्ण, प्रजापत्य, असुर, गन्धर्व, राक्षस और पैशाच। इसमें प्रथम चार प्रकार के विवाह श्रेष्ठ कहे गये हैं। अन्तिम चार निकृष्ट कहे गये है।

● गोबर से जमीन पोतने का क्या अभिप्राय है ?

गोबर में एक प्रकार की विशेष शक्ति निहित होती है जिसके सम्पर्क में आने पर टी. वी. वायरस तत्काल मर जाते हैं। वैसे तो धार्मिक दृष्टि से उस स्थान को पवित्र बनाने के लिए उस स्थान की पुताई करते हैं । वैज्ञानिक दृष्टि से भी इसका महत्व बहुत अधिक है। इटली के डाक्टरों ने गोबर की उपयोगिता पर शोध करके टी. वी. सेनिटोरियम में रखने की सलाह देते है।

● पत्नी पति के वाम भाग (बायीं ओर) कब-कब बैठती है?

सिन्दूर दान, द्विरागमन, भोजन, शयन और सेवा के समय अभिषेक तथा ब्राह्मणों के पाँव धोते समय पत्नी को पति के बायीं ओर रहना चाहिए।

● दाहिनी (दीयीं ओर) पत्नी को किन अवसरों पर बैठना चाहिए?

कन्यादान, विवाह, यज्ञकर्म एवम् जातकर्म, नामकरण तथा अन्न प्राशन के शुभ अवसर पर पत्नी को पति के दाहिनी ओर बैठना चाहिए।

● यह बाएं और दायें का चक्कर क्यों ?

जो कर्म स्त्री प्रधान होते हैं अथवा जो कर्म इह लौकिक होते हैं। उसमें पत्नी पुरूष के बायें ओर बैठती है—जैसे मांग में सिन्दूर भरना, सेवा, शयन आदि। परन्तु यज्ञादि, कन्यादान, विवाह ये सभी कार्य पुरुष प्रधान हैं। इसमें पत्नी दायीं ओर बैठती है।

● मानव, मनुष्य, पुरूष, आदमी और इन्सान। इन सभी का मतलब एक ही होता है फिर भी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग रूप में प्रयोग किया जाता है। ऐसा क्यों ?

ऊपर लिखे शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची हैं, किन्तु इनके अन्दर जो गूढ़ अर्थ छिपा हैं, उन सभी का अर्थ भाव अलग हैं। महर्षि मनु की सन्तान को 'मानव' कहे गये। आदम की सन्तान 'आदमी' कहलाये। जिसमें इन्सानियत होती है वे 'इन्सान' कहाते हैं। जिसने अपना व्यक्तित्व स्वयं बनाया उसे 'व्यक्ति' तथा जिसमें पुरूषार्थ करने की क्षमता है वह 'पुरुष' कहलाया। तात्पर्य यह कि एक होकर भी अनेक नाम से पुकारे जाते है।

● तैंतीस करोड़ देवताओं का क्या रहस्य हैं?

अष्टवसु, एकादश रूद्र, द्वादश आदित्य, इन्द्र और प्रजापति नाम से तैंतीस कोटि (करोड़) संख्या लोक व्यावहार में गयी है। प्रत्येक देवता की विभिन्न कोटियां की दृष्टि से तैंतीस कोटि (करोड़) संख्या लोक व्यवहार में प्रचलित हो गयी। कुछ विद्वानों के कथानुसार आकाश में तैतीस करोड़ तारे हैं उन्हे ही तैंतीस करोड़ देवता कहते हैं।

● अष्टवसु के नाम बताइये।

आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास-ये अष्टवसु, देवता है।

● **एकादश (ग्यारह) रूद्रों के नाम बताइये।**

मनु, मन्यु, महत्, शिव, ऋतुध्वज, महिनस, उम्रतेरस, काल, वामदेव, भाव और धृत-ध्वज।

● **बारह आदित्य कौन-कौन हैं ?**

अंशुमान, अर्यमन, इन्द्र, त्वष्टा, धातु, पर्जन्य, पूषन्, भग, वरूण, वेवस्वत्, विष्णु।

● **भारतीय संस्कृति में भोजन के क्या नियम हैं ?**

भोजन करते समय सर्व-प्रथम भोजन (अन्न) को प्रणाम करें जो तुम्हारी क्षुधा तृप्त करती है। भोजन की कभी निन्दा न करें क्योंकि तुम्हें तो भोजन (जैसा भी है) मिल रहा है कितने ऐसे हैं जिन्हें दो-दो दिन तक भोजन ही नहीं मिलता है। स्नान करने के पश्चात् ही भोजन करें। बातें करते हुए भोजन न करें अर्थात् भोजन करते समय चुप रहना चाहिए।

कई लोगों के साथ बैठकर भोजन करते समय बहुत जल्दी भोजन करके उठना नहीं चाहिए। अन्य लोगों को भी खाने का अवसर दें।

जूते, चप्पल आदि पहनकर भोजन न करें। फूटे बर्तनों में भोजन न करें, यह दरिद्रता की सूचक है। खाट पर बैठकर भोजन करें।

कपड़े पर, हाथ पर पीपल के पत्तो पर, आक के पतों पर बट-पत्र पर भोजन न करें। भोजन में कमल दल के पते, आम और केले के पते, सोने और चाँदी के बर्तन ही शुद्ध माने गये हैं। सबको खिलाने के बाद सबसे अंत में स्वयं भोजन ग्रहण करें।

● **दिग्पाल किसे कहते हैं ?**

दिशाओं के स्वामी को दिग्पाल कहते हैं।

● **दिग्पाल की संख्या और नाम बतायें।**

दिशायें दस होती हैं और दिग्पाल भी दस होते हैं। दसों दिग्पालों के नाम इस प्रकार हैं— इन्द्र, यम, कुबेर, वरूण, रूद्रं, अग्नि, नैऋत्य, पवन, ब्रह्मा, विष्णु।

● **हिन्दू सनातन धर्म अन्तर्जातीय (अन्य जाति में) विवाह करने की आज्ञा क्यों नहीं देता ?**

दो अलग-अलग जातियों में जो विवाह होता हैं उत्पन्न सन्तान को 'वर्णसंकर' कहा गया है। यह वर्णसंकर संतान कुल का नाश करके नरक में ले जाने को कारण बनती है। वर्ण संकर सन्तान पितरों का तर्पण, पिण्डदान आदि करने के योग्य नहीं माने गये हैं क्योंकि इनके पिण्डदान से पितर तृप्त नहीं होते। वैज्ञानिकों ने आम और बेर आदि वृक्षों में दूसरी नस्ल के पौधों का पैबन्द लगाकर एक ही वृक्ष में दो प्रजातियों के फल लेने की विधि तैयार की किन्तु दुःख की बात यह कि इन पौधों में लगे फलों के बीज से आगे पौधे उत्पन्न करने की क्षमता समाप्त हो जाती है। तात्पर्य यह कि वर्ण संकर सन्तान से वंश वृद्धि की सम्भावना समाप्त हो जाती है। विजातीय विवाह से दोनों के गुण समाप्त होकर नवीन विकृति युक्त गुणें का प्रादुभवि होता है। जिसे प्रकार शुद्ध देसी घी अति स्वादिष्ट और प्रिय होता है तथा मधु

(Honey) अति मधुर, मींठा होता हैं किन्तु यदि दोनों को मिला दिया जाये तो एक किस्म का जहर बन जाता है। इसी कारण धार्मिक एवम् वैज्ञानिक–दोनों कारणों से अन्तर जातीय विवाह का निषेध है।

● पूजा-पाठ के समय आचमन कराते हैं आचमन क्या हैं ?

कण्ठ शोधन के लिए आचमन किया जाता है। आचमन करके से कफ आदि की सफाई हो जाती है और श्वास क्रिया में तथा मंत्रों के उच्चारण में सहायता मिलती हैं। अन्यथा कफ आदि के कारण मंत्रोच्चारण में त्रुटि हो सकती है।

● आचमन तीन बार ही क्यों करते हैं ?

तीन बार आचमन करने से कामिक, मानसिक और वाचिक त्रिविध पापों की निवृति होती है।

● प्राणायाम क्या है? प्राणायाम से क्या कोई लाभ होता है?

प्राणायाम से श्वास क्रिया का नियमन होता है। इसका सीधा अर्थ प्राणों का व्यायाम करना होता है। प्राणायाम करने से ही ऋषि–मुनियों ने दीर्घायु प्राप्त किया। प्राणायाम के द्वारा स्वेच्छा से मृत्यु प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती हैं।

● प्राणायाम से 'इच्छा मृत्यु' कैसे सम्भव है ?

प्राणायाम के द्वारा मनुष्य मन को निर्यत्रित करके 'प्राणवायु' को पकड़ता है और छोड़ता है और इच्छानुसार प्राणों को कपाल में स्थित 'ब्रह्म रन्ध' में चढ़ाकर 'इच्छा मृत्यु' पा सकता है किन्तु इसके लिए कठिन साधना करना होता है।

● 'पुनर्जनम वैज्ञानिक है या केवल अवधारणा है।'

विज्ञान के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता बल्कि वह किसी अन्य रूप में परिवर्तित हो जाती है। जै हरे–भरे वृक्ष सैकड़ों वर्ष बाद सूख जाते हैं। तब उन्हें हम वृक्ष न कहकर 'लकड़ी' कहते हैं और वही लकड़ी जमीन के नीचे दबी रहती है। तो सौ पचास वर्ष बाद कोयले के रूप में हो जाती हैं, कोयला जलकर राख और धुएँ में बदल जाता हैं राख उड़कर इधर–उधर चली जाती है किन्तु नष्ट नहीं होती। विज्ञान का यह आत्मा के अमर होने का और पुनर्जन्म की पुष्टि करता है।

● लोग भविष्य के लिए ज्यादा चिन्तित रहते हैं। क्या भविष्य को भाग्य के सहारे छोड़ देना चाहिए ?

सृष्टि की रचना जब से हुई, तब से लेकर आज तक मनुष्य अपने भविष्य को जानने के प्रति काफी जिज्ञासु रहा है और यह जिज्ञासा भविष्य में आने वाली सन्तानों में भी रहेगी। इसी भविष्य की जानकारी के लिए अनेक विद्याएँ भी प्रकाश में आयी जैसे–हस्त रेखा, अंक ज्योतिष, जन्म कुण्डली से भविष्य फल आदि। फिर भी 'भविष्य' एक अनुसुलझी पहेली की भांति है। कुछ लोग कहते हैं कि भविष्य कर्म के अनुसार बनता–बिगड़ता है। इस सन्दर्भ में कृष्ण जी ने गीता के उपदेश दिया–'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।'

लेकिन वहीं भगवान कृष्ण ने जब कुन्ती से कर्म प्रधानता की व्याख्या की तब कुन्ती ने कहा–हे केशव! यह मानती हूँ कि संसार में कर्म प्रधान है। कठोर परिश्रम एवम् पुरूषार्थ से सब कुछ पाया जा सकता है किन्तु कई बार भाग्य के सामने पुरूषार्थ एवम् विद्या दोनों निष्फल हो जाते हैं। अब प्रत्यक्ष ही देख लो विद्वानों में महा विद्वान पुत्र युधिष्ठिर है। जिसे लोग धर्मराज कहते हैं महावीर भीम अर्जुन और नकुल–सहदेव जैसे पुत्रों के होते हुए दुनिया दुर्भाग्यवश हस्तिनापुर पर शासन कर रहा है। यह उसके भाग्य की प्रबलता ही है।

● कर्मफल क्या है ? क्या कर्मफल अवश्य भोगने पड़ते हैं?

जो शुभ–अशुभ, पुण्ड अथवा पाप जीव करता हे उसके उन कर्मो के अनुसार उसे 'फल' की प्राप्ति होती है। कितने लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति कभी पाप नहीं किया फिर भी बेचारा दरिद्री और अभावों में जी रहा है। शायद उसके भाग्य में दुःख ही लिखे हैं और अमुक (दूसरा कोई) दूसरों को सताता है, मारता पीटता है, दूसरों का धन हड़प लेता है, झूठ–ठगी, बेईमानी सब कुछ करता है और ऐश की जिन्दगी जी रहा है। ये सब पिछले जन्मों के कर्मफल हैं। पूव्र जन्म में जिसने जैसा भी कर्म किया होगा उसका फल उसे इस जन्म में मिल रहा और इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में भोगना होगा।

● श्राद्ध किसे कहते हैं ?

मृत पितरों के उद्‌दश्य से जो अपने प्रिय भोज्य पदार्थ ब्राह्मण को श्रद्धपूर्वक प्रदान किये जाते हैं उस अनुष्ठान को 'श्राद्ध' कहते है।

● 'श्राद्ध' में किया गया भोजन मृत प्राणी को कैसे प्राप्त होता है ?

लोगों का ऐसा विश्वास है कि श्राद्ध में जो भोजन खिलाया जाता है। वह पदार्थ ज्यों का त्यों, उसी तौल अनुपात में मृत पितर को प्राप्त होता है। वास्तव में ऐसा नहीं श्राद्ध में दिये गये भोजन का सूक्ष्म अंश परिणित होकर उसी अनुपात में प्राणी को प्राप्त होता है।

● क्या श्राद्ध करते समय मृत पितर दिखायी देते हैं ?

रामायण कथा के अनुसार जब पुरूषोतम श्री रामचन्द्र जी अपने पिता का श्राद्ध कर रहे थे (यह प्रसंग वन का है) तब सीता जी ने श्राद्ध की समस्त सामग्री अपने हाथ से तैयार की परन्तु जब निमंत्रित ब्राह्मण भोजन करने लगे तब सीता जी दौड़कर कुटी में जा छिपी। बाद में श्री राम जी ने सीता की घबराहट और छिपने का कारण पूछा–तब वे कहने लगी–स्वामी। मैने ब्राह्मणों के शरीर में आंपके पिता श्री के दर्शन किये। अब आप ही बताइये जिन्होंने पहले मुझे समस्त आभूषणों में विभूपित अवस्था में देखा था। वे मेरे पूज्य श्वसुर जी

मुझे इस तरह पसीने और मैल से सनी हुई कैसे देख पाते ? ऐसा ही एक प्रसंग महाभारत में भी मिलता है जब भीष्म जी अपने पिता शान्तुन जी का पिण्डदान करने लगे। उनके सामने साक्षात् शान्तुन जी के दाहिने हाथ ने उपस्थित होकर पिण्ड ग्रहण किया ।

- **अन्त्येष्टि संस्कार किसे कहते हैं? अन्त्येष्टि संस्कार क्यों करते हैं?**

किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाये। मृत्योपरान्त जो मृतक के आत्मा की शान्ति के लिए क्रिया क्रम किये जाते हैं। उसे अन्त्येष्टि संस्कार कहते हैं। मृतक के मोक्ष एवम् परलोक सुधार हेतु यह संस्कार किये जाते हैं।

- **मंत्रोच्चार करके ग्रहों का आह्वान करके ब्राह्मण या तांत्रिक लोग ग्रहों को बुलाने का उपक्रम करते हैं। क्या वास्तव में आह्वान करने पर ग्रह आते हैं ? आते हैं तो कैसे?**

जिसे प्रकार फोटो ग्राफी कैमरे के छोटे से लेन्स में बड़े-बड़े भवन, किले आदि समा जाते हैं उसी प्रकार हमारी आँखों में जो प्राकृतिक लेन्स लगा है इसमें पूरे ग्रह मण्डल, सूर्य, चन्द्रमा, आदि समा जाते हैं। ऐसे ही सूक्ष्म में सारे ग्रह हवन कुण्ड में आ सकते है।

- **शिख (चोटी) क्यों रखते हैं ? तथा शिखा में ग्रन्थ (गाँठ) लगाने का क्या उद्देश्य है ?**

सन्ध्या चनदन, गायत्री जप, यज्ञ अनुष्ठान आदि में शिखा का होना परम आवश्यक है। द्विज (ब्राह्मणों) के लिखे शास्त्र भी शिखा रखने के लिए कहता है। धर्म शास्त्रों के अनुसार शिखा में ग्रिन्थ लगाकर ही संध्यावन्दन यज्ञ-हवन आदि करना चाहिए।

- **शिखा रखने पर कोई वैज्ञानिक आधार हो तो स्पष्ट करें।**

शिखा वाले स्थान पर 'ब्रह्म रन्ध' होता है जिसे 'दशम द्वार' भी कहते हैं। जरा सी चोट उस स्थान पर लगने से मुष्य की मृत्यु भी हो सकती है। दशामद्वारा की रक्षा हेतु ही शिखा रखने का विधान है।

- **हिन्दू स्त्रियाँ मांग में सिन्दूर क्यों लगाती हैं ?**

सीमन्त अर्थात् माँग में सिन्दूर लगाना सुहागिन स्त्रियों का सूचक है। हिन्दुओं में विवाहित स्त्रियाँ ही सिन्दूर लगाती हैं। कुंवारी कन्याओं एवम् विधवा स्त्रियों के लिए सिन्दूर लगाना वर्जित है। इसके अलावा सिन्दूर लगाने से स्त्रियों के सौन्दर्य में भी निखार आता है अर्थात् उनकी सुन्दरता बढ़ जाती है। विवाह-संस्कार के समय वर (दूल्हा), वधू (दुल्हन) के मस्तक में मंत्रोच्चारण के मध्य पाँच अथवा सात बार चुटकी से सिन्दूर डालता है। तत्पश्चात् विवाह

कार्य सम्पन्न हो जाता है। उस दिन से वह स्त्री अपने पति की दीर्घायु (लम्बी आयु) के लिए प्रतिदिन सिन्दूर लगाती है। मांग में दमकता सिन्दूर स्त्रियों के श्रृंगार का प्रमुख अंग है।

● ब्रह्मरन्ध और अध्मि नामक मर्मस्थान के ठीक ऊपर स्त्रियाँ सिन्दूर लगाती हैं जिसे सामान्य भाषा में समीन्त अथवा माँग कहते हैं। पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों का यह भाग अपेक्षाकृत कोमल होता है। चूँकि सिन्दूर में पारा जैसी धातु अत्यधिक मात्र में पायी जाती है जो स्त्रियों के शरीर की विद्यतीय ऊर्जा को नियंत्रित करत ाहै तथा मर्मस्थल को बाहरी दुष्प्रभावों से बचाता भी है अतः वैज्ञानिक दृष्टि से भी स्त्रियों को सिन्दूर लगाना आवश्यक है।

● तिलक क्यों लगायें ?

शास्त्रों के अनुसार यदि ब्राह्मण तिलक नहीं लगाता तो उसे 'चाण्डाल' समझना चाहिए। तिलक धारण करना धार्मिक कार्य माना गया है।

● तिलक केवल ब्राह्मण लगा सकते हैं अन्य जातियाँ नही क्यों ?

तिलक, त्रिपुण्ड, टीका, अथवा बिन्दिया आदि का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। मनुष्य की दोनों भौहों के बीच (जिस स्थान पर तिलक लगाते हैं) 'आज्ञा चक्र' स्थित है। इस चक्र पर ध्यान केन्द्रित करने पर साधक का मन पूर्ण शक्ति सम्पन्न हो जाता है। इसे 'चेतना केन्द्र' भी कहा जाये तो अनुचित न होगा अर्थात् समस्त ज्ञान एवम् चेतना का संचालन इसी स्थान से होता है। 'आज्ञा चक्र' ही 'तृती चक्र' जागृत होता है जिसकी तुलना राडार, टेलिस्कोप आदि से की जा सकती है। इसके अलावा तिलक सम्मान-सूचक भी है। तिलक लगाने से साधुता (सज्जनता एवम् धार्मिकता का आभास होता है।

● तिलक धारण करने का वैज्ञानिक कारण स्पष्ट करें ?

जब हम मस्तिष्क से आवश्यकता से अधिक काम लेते हैं तब ज्ञान-तन्तुओं का विचारक केन्द्र भृकुटि और ललाट के मध्य भाग में पीड़ी उत्पन्न हो जाती है ठीक उस स्थान पर जहां तिलक, त्रिपुण्ड लगाते हैं। चन्दन का तिलक ज्ञात-तन्तुओं को शीतलता चन्दन का तिलक लगाता है उसे सिर दर्द की शिकायत नहीं होती। इस तथ्य को डॉक्टर्स एवम् वद्य हकीम स्वीकार करते हैं।

● विश्व कप क्रिकेट 2015 के आयोजक कौन है ?

14 फरवरी, 2015 से होनेवाले विश्व कप आयोजन ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड दोनों देशों में होंगे। इसमें 14 टीमें 14 स्थानों पर, 44 दिों में 49 मैच खेलेगी।

प्रश्नोत्तर (एक नजर में)

प्रश्न–वह कौन-सा ऐसा पंछी है जो पीछे की ओर उड़ता है ।

उत्तर–गुंजन पंछी

प्रश्न–वह कौन-सा पौधा है जो आदमी की शक्ल से मिलता है? उसे उखाड़ने पर उसमें बच्चे सी रोने की आवाज आती है?

उत्तर–मैड्रक पौधा (अमेरिका)

प्रश्न–विश्व के किस शहर को बिग एपल भी कहा जाता है ।

उत्तर–न्यूयार्क (अमेरिका)

प्रश्न–विश्व की सबसे तेज रफ्तार की ट्रेन किस देश में है ?

उत्तर–बुलेट प्रुफ ट्रेन 480 किमी./घंटा (जापान)

प्रश्न–वह कौन-सी मछली है जो बच्चा पैदा करती है तथा दूध पिलाती है?

उत्तर–शील और ह्वेल मछली।

प्रश्न–वह कौन-सी मछली है जो पानी में तैरती, जमीन पर चलती, तथा हवा में उड़ती हैं ?

उत्तर–गरनाई मछली।

प्रश्न–विश्व के ऐसे नगर का नाम बताइये जहाँ पर सालों भर वर्षा होती है?

उत्तर–दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के इक्वाडोर देश का राजधानी नगर।

प्रश्न–ऐसे प्रदेश का नाम बताइए, जहाँ पर केवल जाड़े में वर्षा होती है?

उत्तर–भूमध्य सागरीय प्रदेश।

प्रश्न–आपको अमावस्या के दिन और उसके बाद वाले दिन चाँद कैसा दिखाई देता है?

उत्तर–दिखाई नहीं देता है।

प्रश्न–किसी ऐसे पेड़ का नाम बताइये जिसकी पतियों में डंटियाँ नहीं होती ?

उत्तर–मेंहदी।

प्रश्न–पंखे से शरीर ठंडक अनुभव करता है?

उत्तर–वाष्पन से ठंडक पैदा होती है, इसके कारण।

प्रश्न–विमान पर चढ़ने से पहले पेन की स्याही निकाल देने की सलाह दी जाती हैं ?

उत्तर–क्योंकि ऊँचाइयों पर हवा का दाब कम हो जाता है।

प्रश्न–रेल पटरियों के बीच थोड़ी-सी जगह क्यों छोड़ दी जाती है ?

उत्तर–यह स्थान इसलिए छोड़ जाता है। कि गर्मी के कारण पटरियाँ फैलती हैं, अत: रेल पटरियों का लोहा फैले तो उसे फैलने का स्थान मिल सके।

प्रश्न–शीशे को गरम किया जाय तो ह टूट जाता है, परन्तु धातु टूटती नहीं क्यों ?

उत्तर–क्योंकि शीशे का प्रंसार (एक्सटेंशन) नियमित नहीं होता है।

प्रश्न–दो कम्बल बराबर की दहरी मोआई वाले एक कम्बल से अधिक गर्म रहते हैं ?

उत्तर–दो कम्बल अधिक गर्म इसलिए रहते हैं क्योंकि उनके बीच हवा की तह से गर्मी अथवा ताप गुजरने नहीं पाता।

प्रश्न–गर्मी वाले दिनों में ठण्ड वाले दिनों की तुलना में कपड़े जल्दी सूख जाते हैं ?

उत्तर–गर्मी वाले दिनों में हवा में नमी कम होती है जल ग्रहण करने की ताकत अधिक होती है। ठण्ड वाले दिनों में हवा में नमी अधिक होती है इसलिए यह बाहर से जल कम मात्रा में ही सोख सकती है।

प्रश्न–धातु के बने हुए बर्तन का हत्था लकड़ी होता है क्यों ?

उत्तर–लकड़ी में ताप चालक नहीं होता, जबकि धातु ताप चालक होती है।

प्रश्न—जल से भरे बर्तन के तल पर पड़ा कोई सिक्का अथवा अन्य वस्तु ऊपर उठती हुई नजर आती है, क्यों ?

उत्तर—इसलिए कि उस सिक्के से जो प्रकाश किरणें निकलती हैं, वह हवा में बाहर की ओर झुकती है।

प्रश्न—श्वास ठण्ड में दिख जाता हैं, परन्तु गर्मी में नहीं दिखता, क्यों?

उत्तर—श्वास में समाये वाष्प कण ठण्ड में से संघनित (कैंडैस) होकर द्रव रूप लेते है और दिखाई देने लगते हैं।

प्रश्न—ठण्डे मौसम में पानी की पाइपें फट जाती है क्यों ?

उत्तर—उनमें जल जम जाने के कारण बर्फ जाती है, परन्तु पाइप का आयतन उतना ही रहता है। इस कारण पाइपें फट जाती हैं।

प्रश्न—पत्ते हरे होते हैं क्यों ?

उत्तर—शवत सूर्य प्रकाश सात रंगों में बना होता हैं। कोई भी वस्तु हरी अथवा किसी रंग की इस कारण दिखती है, कि वह अन्य छः रंगों को सोख लेती है। और केवल हरे रंगों को ही परावर्तित करती है। पत्ते हरे इसलिए दिखते हैं क्योंकि वे हरा प्रकाश ही परावर्तित करते हैं।

प्रश्न—दौड़ती हुई गाड़ी से उतरने पर व्यक्ति गिर जाता है क्यों ?

उत्तर—गाड़ी के साथ उसकी गति के आगे की ओर उतरने वाले व्यक्ति का शरीर चल रहा होता है। कूदने पर पाँव सड़क पर लगाता है तो पाँव रूक जाता है। परन्तु शरीर के अन्य भागों की गति वैसे ही चलती है, जिससे आदमी गाड़ी चलने की दिशा में गिर जाता है।

प्रश्न—गोली चलाने पर बन्दूक पीछे की ओर धक्का देती हैं क्यों ?

उत्तर—न्यूटन के तीसरा नियम के अनुसार हर क्रिया के बराबर प्रतिक्रिया होती है।

प्रश्न—मेघगर्जन की आवाज बाद में सुनते हैं, किन्तु प्रकाश पहले दिखाई दे जाता है, क्यों ?

उत्तर—प्रकाश की गति ध्वनि की गति से तेज होती है।

प्रश्न—दूध देने वाला बकरा कहाँ पाया गया, देश का नाम बतलाइए?

उत्तर—लहरपुर, जिला सीतापुर के पशु चिकित्सालय पर, भारत में।

प्रश्न–तैमूर ने किस वर्ष में भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को लूटा ?

उत्तर–सन् 1398 में ।

प्रश्न–भारत में प्रारंभिक "गणतंत्र" किसने स्थापित किये ?

उत्तर–शाक्यों तथा लिच्छवियों ने ।

प्रश्न–"ब्रह्म समाज" की स्थापना किसने की थी ?

उत्तर–राजा राममोहन राय।

प्रश्न–महात्मा गाँधीजी का प्रिय गीत वैष्णव जनतो किसने रचा था?

उत्तर–नरसिंह मेहता।

प्रश्न–महात्मा गाँधी किस समाचार-पत्र से संबंधित थे ?

उत्तर–हरिजन समाचार-पत्र।

प्रश्न–आर्य किसकी आराधना (पूजा-अर्चना) करते थे ?

उत्तर–प्रकृति के देवताओं की।

प्रश्न–चारों वेदों और उनके उपवेद के नाम बताइए।

उत्तर–(1) ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है, (2) यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है, (3) सामवेद का उपवेद गन्धर्व वेद है, (4) अथर्ववेद का उपवेद अर्थशास्त्र है।

प्रश्न–धार्मिक ग्रन्थ "पुराण" के बारे में आप क्या जानते है ?

उत्तर–पुराण 18 हैं–1. ब्रह्म पुराण, 2. पद्म पुराण, 3. विष्णु पुराण 4. शिव पुराण, 5. श्रीमद्भगवद् पुराण, 6. नारद पुराण, 7. अग्नि पुराण, 8. ब्रह्म वैवर्त्त पुराण, 9. वाराह पुराण.........

प्रश्न–संसार के सबसे बड़े हेलीकॉप्टर का नाम बताइये ?

उत्तर–सोवियत संघ द्वारा निर्मित मिग 26, जो भारतीय वायु सेना में भी शामिल किया गया है।

प्रश्न–जीभ स्वाद कैसे बताती है?

उत्तर–जीभ की ऊपरी सतह दानेदार स्वाद कलिकाएँ हैं जो कोशिकाओं से बनी है। यह स्वाद कलिकायें चार प्रकार की होती हैं, जिनके द्वारा स्वादों का पता चलता है।

प्रश्न–उदय और अस्त के समय सूर्य लाल दिखाई देता है ?

उत्तर–सुबह और शाम को सूर्य की किरणों को वायुमण्डल से अधिक दूरी से गुजरना पड़ता है, वायुमण्डल में मौजूद, धूल, धुएँ तथा भाप के कणों के कारण बैंगनी, हरे, नीले रंग के प्रकाश का प्रकीर्णन हो जाता है, जिससे केवल लाल, नारंगी एवं पीले रंग का प्रकाश ही हमारी आँखों तक पहुँच पाता है। इन तीनों में लाल रंग की मात्रा अधिक होती है, जिससे सूर्य उदय एवं अस्त होते समय लाल दिखाई देता है।

प्रश्न–विश्व का सबसे छोटा देश कौन-सा है?

उत्तर–वेटिक सिटी। इस देश का कुल क्षेत्रफल 17 वर्गमील है।

प्रश्न–छः महीने का दिन और छः महीने की रात कहाँ पर होती है ?

उत्तर–ध्रुव पर । क्योंकि प्रत्येक ध्रुव छः महीने तक सूर्य के सामने निकट रहता है और छः महीने सूर्य से दूर।

प्रश्न- नवजात शिशु को तीन टीके किससे बचने के लिए लगाये जाते हैं ?

उत्तर- कुकरखाँसी, टिटेनस और डिफ्थेरिया

प्रश्न–जब हम चलते हैं तो चन्द्रमा हमार साथ चलता है क्यों ?

उत्तर–चन्द्रमा पृथवी से लगभग 3,84,000 किमी. दूर है। चन्द्रमा द्वारा बनाया गया हमारी आँख पर कोण बहुत ही कम बदलता है, जिससे चन्द्रमा हमें अपने साथ-साथ चलता हुआ दिखाई देता है।

प्रश्न–उल्लू को रात के अंधेरे में दिखाई देता है क्यों ?

उत्तर–उल्लू को अंधेरे में दिखाई देने के चार प्रमुख कारण हैं–

1. उल्लू की आँखों की पुतलियाँ अधिक फैलती हैं।
2. इसकी आँख में एक विशेष अंग होता है जिसे पेक्टन कहते हैं।
3. उल्लू की आँख में संवेदन कोशिकाओं की संख्या बहुत अधिक होती है।
4. इसकी आँख में लाल रंग का पदार्थ (प्रोटीन) होता है।

प्रश्न–दूध का रंग सफेद दिखाई देता है क्यों ?

उत्तर–दूध और दही के अणुओं की रचना ही इस प्रकार से है कि सातों रंगों में से किसी भी रंग को नहीं सोखते, बल्कि सभी को परावर्तित कर देते हैं। इसलिए श्वेत प्रकाश श्वेत दिखाई देता है।

प्रश्न–वह कौन-सा पदार्थ है जो आग में नहीं जलता है?

उत्तर–एस्बेस्टस एक ऐसा विचित्र पदार्थ है जो आग मे नहीं जलता है।

प्रश्न–आकाश नीला दिखाई देता है क्यों ?

उत्तर–जब प्रकाश की किरणें वायुमण्डल से टकराती हैं तब सूर्य के सातों रंगों में से बैंगनी, जामुनी तथा नीले रंग सबसे अधिक छितरा जाते हैं और लाल रंग सबसे कम। प्रकाश के छितरने से हमारी आँखों तक पहुँचने वाले रंगों में नीला रंग अधिक होता है, इसलिए आकाश हमें नीला दिखाई देता है।

प्रश्न–बरसने वाले बादल काला दिखाई देते हैं क्यों ?

उत्तर–सूर्य के प्रकाश के सभी रंगों को अवशोषित करने वाली असंख्य बूदें, बरसने वाले बादलों में होती हैं। इससे बरसने वाले बादलों का रंग काला दिखाई देता है।

प्रश्न–पान खाने से मुहँ लाल हो जाता है क्यों ?

उत्तर–पान लगे चूने और कत्थे से एक रासायनिक क्रिया होती है, जिससे पान का रंग गहरा लाल हो जाता है। मुँह का लार भी इसमें सहायक होती है।

प्रश्न–महिलाओं की आवाज सुरीली होती है क्यों ?

उत्तर–महिलाओं में टेस्टोस्टेरोने नामक हारमोन नहीं होता है जिससे उनकी आवाज सुरीली होती है। इसी हारमोन के पैदा होने से पुरूषों की आवाज में भारीपन आ जाता है?

प्रश्न–वह कौन-सा ऐसा पदार्थ है जो 14 वर्ष की आयु तक बच्चों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

उत्तर–प्रोटीन ।

प्रश्न–नाखून काटने पर दर्द नहीं होता है क्यों ?

उत्तर–नाखून किरेटिन नामक पदार्थ से बनते हैं, जो एक प्रकार का निजीव प्रोटीन है।

प्रश्न–पत्थर खाने वाले पक्षी का क्या नाम है ?

उत्तर–शुतुरमुर्ग।

प्रश्न–चन्द्रमा कभी छोटा कभी बड़ा दिखाई देता है क्यों ?

उत्तर–चन्द्रमा न कभी घटता है, न कभी बढ़ता है। सूर्य के पड़ने वाले प्रकाश की विविधतां के कारण ही चन्द्रमा छोटा-बड़ा दिखाई देता है।

प्रश्न–जुगनू रात में कैसे चमकते हैं ?

उत्तर–जुगनू के पेट के नीचे पीछे की ओर प्रकाश उत्पन्न करने वाले अंग होते हैं, जो नाड़ियाँ से नियन्त्रित होते हैं। इन अंगों में ल्यू सीफेरिन नामक पदार्थ होता है, जब ल्यू सीफेरिन ऑक्सीजन से संयोग करता है तब प्रकाश निकलता है।

प्रश्न–छिपकली अपनी पूँछ छोड़कर कैसे भाग जाती है आखिर क्यों?

उत्तर–छिपकली द्वारा पूँछ छोड़ना एक प्राकृतिक गुण है। छिपकली की पूँछ की हड्डियाँ एक-दूसरे से ढील रूप में जुड़ी होती हैं जिसे छोड़ने में कठिनाई नहीं होतीं। खून भी नहीं निकलता क्योंकि रूधिर कोशिकाएँ अंतिम सिरे पर बंद होती है?

प्रश्न–गिरगिट अपना रंग बदलता है ?

उत्तर–आपको जानकर आश्चर्य होगा कि गिरगिट की त्वचा की ऊपरी परतें पारदर्शक होती हैं, इसी परत के नीचे की कोशिकाओं में लाल, पीले, काले रंग के पदार्थ होते हैं, जिनकी रचना दानेदार होती है। कोशिका के सिकुड़ने पर दाने इकट्ठे होते हैं तो रंग काला हो जाता है और फैलने पर दाने फैलते हैं तो दूसरे रंग उत्पन्न हो जाते है।

प्रश्न–बताइए रात में चमगादड़ को दिखाई देता है आखिर क्यों ?

उत्तर–चमगादड़ कान और मुँह की सहायता से उड़ते हैं यह अपनी आँखों का प्रयोग अपने भोजन एवं कीड़े-मकोड़े को पकड़ने में करते हैं।

प्रश्न–उड़ने वाले साँप का नाम बताइये ?

उत्तर–यूरोफ्लेटाइडी।

प्रश्न–साँप अपनी केंचली बदलते हैं क्यों ?

उत्तर–साँपों का एक विशेष गुण है, उनका शरीर जीवन भर बढ़ता रहता है। वृद्धावस्था में भी शारीरिक वृद्धि के कारण उनकी त्वचा छोटी पड़ जाती है, अतः साँप अपनी बाहरी त्वचा एक निर्धारित समय के पश्चात् छोड़ देता है।

प्रश्न–वह कौन-सा ऐसा पौधा है जो अपने भोजन के लिए कीटों को पकड़ता है।

उत्तर–यूट्रीकुलेरिया ।

प्रश्न–कोयल वसन्त ऋतु में ही गाती है क्यों ?

उत्तर–वसन्त ऋतु नर और मादा कोयलों के मिलने की ऋतु है। इस ऋतु में कोयल कुहू–कुहू की आवाज पैदा करके मादा कोयल को रिझाती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मादा कोयल मीठी आवाज नहीं पैदा कर सकती।

प्रश्न–मुर्दा (लाश) पानी पर तैरता है क्यों ?

उत्तर–मृतक व्यक्ति का शरीर (लाश) गैस के कारण पानी में फुलने लगता है। फुलने के कारण शरीर का आयतन बढ़ जाता है और घनत्व कम हो जाता है। जब शरीर का घनत्व पानी से कम हो जाता है, तो मुर्दा (लाश) पानी पर तैरने लगता है।

प्रश्न– बालों का बढ़ना कब बन्द हो जाता है ?

उत्तर–बालों का निर्माण कोशिकाओं से होता है और ये कोशिकाएं तबतक अपना कार्य करती हैं, जब तक इनमें ईधन मौजूद रहता है। इसीलिए मरने के बाद मनुष्य के बाल बढ़ते है। जब कोशिकाओं का ईधन समाप्त हो जाता है, तो बालों का बढ़ना भी बन्द हो जाता है।

प्रश्न- बिहार राज्य का नाम बिहार क्यों पड़ा?

उत्तर- बिहार शब्द वस्तुत: संस्कृत शब्द बिहार का तद्‌भव है, जिसका अर्थ होता है मठ अर्थात् भिक्षुओं का निवास स्थान। इसलिए राज्य का नाम का बिहार पड़ा।

प्रश्न- क्या आप जानते हैं कि नये बिहार की कुल जनसंख्या क्या है?

प्रश्न- "सिटी ऑफ जॉय" पुस्तक के लेखक कौन हैं ?

उत्तर- डोमिनीक लॉपियेर।

उत्तर- कुल जनसंख्या 10,3804,637 है।

पुरुष : 5,41,85,347 महिला : 4,46,19,290

प्रश्न- क्या आप जानते हैं कि बिहार की साक्षरता प्रतिशत सबसे अधिक और सबसे कम किस किसका है?

उत्तर- अधिक : रौहतास-75.59 प्रतिशत; कम : पूर्णिया-52.49 प्रतिशत

प्रश्न- क्या आप जानते हैं कि बिहार के सबसे बड़ा एवं छोटा जिला कौन है?

उत्तर- बड़ा-पटना छोटा-शेखपुरा

प्रश्न- बिहार के वे कौन-कौन से महान व्यक्ति हुए जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया?

उत्तर- डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद (1962); डॉ॰ जाकिर हुसैन (1963)

मौलाना अबुल कलाम आजाद (1992); जे.आर.डी. टाटा (1992)

लोकनायक जयप्रकाश नारायण (1999); उस्ताद बिस्मिला खाँ (2001)

प्रश्न–प्राचीनकाल में उड़ीसा को किस नाम से जाना जाता था ?

उत्तर–कलिंग।

प्रश्न—बुद्ध का अर्थ क्या होता है ?

उत्तर—ज्ञान सम्पन्न व्यक्ति।

प्रश्न- बिहार में अब तक कितने मुख्यमंत्री एवं उनका कार्यकाल कब तक रहा है?

उत्तर- 1. डॉ. श्रीकृष्ण सिंह (2 जनवरी 1948 से 31 जनवरी 1961)

2. श्री दीपनारायण सिंह (1 फरवरी 1961 से 18 फरवरी 1961 तक)
3. श्री विवेकानन्द झा (18 फरवरी 1961 से 1 अक्टुबर 1963 तक)
4. श्री कृष्ण बल्लव सहाय (2 अक्टुबर 1963 से 5 मार्च 1967 तक)
5. श्री महामाया प्रसाद सिन्हा (5 मार्च 1967 से 28 जनवरी 1968 तक)
6. श्री सतीश प्रसाद सिंहा (28 जनवरी 1968 से 1 फरवरी 1968 तक)
7. श्री विन्देश्वरी प्रसाद मंडल (1 फरवरी 1968 से 22 मार्च 1968 तक)
8. श्री भोला पासवान शास्त्री (22 मार्च 1968 से 29 जून 1968 तक)
   (29 जून 1668 से फरवरी 1969 तक राष्ट्रपति शासन)
9. श्री सरदार हरिहर सिंह (26 फरवरी 1969 से 22 जून 1969 तक)
10. श्री भोला पासवान शास्त्री (22 जून 1969 से 4 जुलाई 1969 तक 4 जुलाई, 1969 से 16 फरवरी 1970 तक राष्ट्रपति)
11. श्री दरोगा प्रसाद राय (16 फरवरी 1970 से 22 दिसंबर 1970 तक)
12. श्री कर्पूरी ठाकुर (22 दिसंबर 1970 से 2 जून 1971 से तक)
13. श्री भोला पासवान शास्त्री (2 जून 1971 से 9 जनवरी 1972 तक)
    9 जनवरी 1972 से 19 मार्च 1972 तक (राष्ट्रपति शासन)
14. श्री केदार पाण्डेय (19 मार्च 1972 से 2 जुलाई 1973 तक)
15. श्री अब्दुल गफूर (2 जुलाई 1973 से 11 अप्रैल 1975 तक)
16. डॉ. जगन्नाथ मिश्र (11 अप्रैल 1975 से 30 अप्रैल 1977 तक)
    (30 अप्रैल 1977 से 24 जून 1977 तक राष्ट्रपति शासन)
17. श्री कर्पूरी ठाकुर (24 जून 1977 से 21 अप्रैल 1979 तक)
18. श्रीराम सुन्दर दास (21 अप्रैल 1979 से 17 फरवरी 1980 तक)
    (17 फरवरी 1980 से 8 जून 1980 तक राष्ट्रपति शासन)

19. श्री जगन्नाथ मिश्र (8 जून 1980 से 14 अगस्त 1983 तक)
20. श्री चन्द्रशेखर सिंह (14 अगस्त 1983 से 12 मार्च 1985 तक)
21. श्री विन्देश्वरी दूबे (12 मार्च1985 से 13फरवरी 1988 तक)
22. श्री भागवत झा आजाद (13 फरवरी 1988 से 12 मार्च 1989 तक)
23. श्री सत्येन्द्र नारांयण सिंह (12 मार्च 1989 से 6 दिसंबर 1989 तक)
24. डॉ जगन्नाथ मिश्र (6 दिसंबबर 1989 से 10 मार्च 1990 तक)
25. श्री लालू प्रसाद यादव (10 मार्च 1990 से 28 मार्च 1995 तक)
(28 मार्च 1995 से 4 अप्रैल 1995 तक राष्ट्रपति शासन)
26. श्री लालू प्रसाद यादव(4 अप्रैल 1995 से 25 जुलाई 1997 तक)
27. श्रीमती राबड़ी देवी (25 जुलाई 1997 से 26 फरवरी 2000 तक)
28. श्री नीतीश कुमार (3 मार्च 2000 से 12 मार्च 2000 तक)
29. श्रीमति राबड़ी देवी (13 मार्च 2000 से 28 फरवरी 2005 तक)
(1 मार्च 2005 से 23 नवंबर 2005 तक राष्ट्रपति शासन)
30. श्री नीतीश कुमार (24 नवंबर 2005 से 20 मई 2014 तक)
31. श्री जीतनराम माँझी (20 मई 2014 से अबतक)

जनगणना 2011 के अनुसार
बिहार दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर एवं साक्षरता दर

क्र.सं.	राज्य/जिला	दशकीय जनसंख्या		साक्षरता दर	
		वृद्धि दर	व्यक्ति	पुरुष	महिला
	बिहार	25.65	63.82	73.39	53.33
1.	पूश्चिमी चम्पा.	28.89	58.06	68.16	46.79
2.	पूर्वी चम्पा.	29.01	58.26	68.02	47.36
3.	शिवहर	27.32	56.00	63.72	47.25
4.	सीतामढ़ी	27.47	53.53	62.56	43.40
5.	मधुबनी	25.19	60.90	72.53	48.30
6.	सुपौल	28.62	59.65	71.65	46.63
7.	अररिया	30.00	55.10	64.15	45.18
8.	किशनगंज	30.44	57.04	65.56	47.98

क्र.सं.	राज्य/जिला	दशकीय जनसंख्या		साक्षरता दर	
		वृद्धि दर	व्यक्ति	पुरुष	महिला
9.	पुर्णिया	28.66	52.49	61.09	43.19
10.	कटिहार	28.23	53.56	60.99	45.37
11.	मधेपुरा	30.65	53.78	63.82	42.75
12.	सहरसा	25.79	54.57	65.22	42.73
13.	दरभंगा	19.00	58.26	68.58	46.88
14.	मुजफ्फरपुर	27.54	65.68	73.61	56.82
15.	गोपालगंज	18.83	67.04	78.38	56.03
16.	सीवान	22.25	71.59	82.77	60.35
17.	सारण	21.37	68.57	79.71	56.89
18.	वैशाली	28.58	68.56	77.00	59.10
19.	समस्तीपुर	25.33	63.81	73.09	53.52
20.	बेगूसराय	25.75	66.23	74.36	57.10
21.	खगड़िया	29.46	60.87	68.51	52.16
22.	भागलपुर	25.13	64.96	72.30	56.49
23.	बाँका	26.14	60.12	69.76	49.40
24.	मुंगेर	19.45	73.30	80.06	65.53
25.	लखीसराय	24.74	64.95	73.98	54.89
26.	शेखपुरा	20.82	65.96	76.14	54.93
27.	नालन्दा	21.18	66.41	77.11	54.76
28.	पटना	22.34	72.47	80.28	63.72
29.	भोजपुर	21.27	72.79	84.08	60.20
30.	बक्सर	21.77	71.77	82.78	59.84
31.	कैमूर (भभुआ)	27.54	71.01	81.49	59.56
32.	रोहतास	20.22	75.59	85.29	64.95
33.	औरंगाबाद	24.75	72.77	82.52	62.05
34.	गया	26.08	66.35	76.02	55.90
35.	नवादा	22.49	61.63	71.40	51.09
36.	जमुई	25.54	62.16	73.77	49.42
37.	जहानाबाद	21.34	68.27	79.3	56.24
[illegible]	अरवल	19.01	69.54	81.27	56.85

झारखण्ड की एक झलक

प्रश्न– झारखंड की कुल कितनी जनसंख्या है?

उत्तर– झारखंड की कुल जनसंख्या–32966238 (2011) के अनुसार

प्रश्न– झारखंड में कुल कितने जिले हैं उन सभी का नाम लिखें?

उत्तर– झारखंड में सभी मिलाकर कुल 24 जिले हैं।

1. गढ़वा
2. चतरा
3. कोडरमा
4. गिरीडीह
5. देवघर
6. गोड्डा
7. साहिबगंज
8. पाकुड़
9. धनबाद
10. बोकारो
11. लोहरदगा
12. पूर्वी सिंहभूम
13. पलामू
14. लातेहर
15. हजारीबाग
16. रामगढ़
17. दुमका
18. जामताड़ा
19. रांची
20. खुंटी
21. गुमला
22. सिमडेगा
23. पश्चिमी सिंहभूम
24. सरायमेला–खरसवान

प्रश्न–. झारखंड में कुल कितने अनुमंडल हैं?

उत्तर– झारखण्ड में कुल मिलाकर 35 अनुमंडल हैं।

प्रश्न– झारखण्ड में कुल कितने प्रखण्ड हैं?

उत्तर– झारखण्ड में सभी मिलाकर 259 प्रखण्ड हैं।

प्रश्न– झारखण्ड में कुल कितने गांव हैं?

उत्तर– झारखण्ड में कुल 32620 गांव हैं।

प्रश्न– झारखण्ड की कुल क्षेत्रफल क्या है?

उत्तर– झारखण्ड की कुल क्षेत्रफल–79714 वर्ग कि.मी.।

प्रश्न– झारखण्ड की सबसे अधिक साक्षरता दर जिला कौन है?

उत्तर– झारखण्ड की सबसे अधिक साक्षरता दर रांची है।

प्रश्न– झारखण्ड की सबसे कम साक्षरता दर जिला कौन है?

उत्तर– झारखण्ड की सबसे कम साक्षरता दर जिला पाकुड़ है।

प्रश्न– झारखण्ड में काला हीरा की नगरी किसे कहते हैं?

उत्तर– झारखण्ड में काला हीरा की नगरी धनबाद को कहते हैं।

प्रश्न– झारखण्ड की साक्षरता दर क्या है?

उत्तर– झारखण्ड की साक्षरता दर 67.63, 2011 के अनुसार है।

प्रश्न– झारखंड की कुल वन क्षेत्र कितना है?

उत्तर– झारखंड की कुल वन क्षेत्र 2,333 वर्ग किमी. है।

प्रश्न– झारखण्ड में सबसे अधिक ठंडा कहाँ पड़ता है?

उत्तर– झारखण्ड में सबसे अधिक ठंडा नेतरहाट में पड़ता है।

प्रश्न– झारखण्ड में कर्क रेखा कहाँ से होकर गुजरती है?

उत्तर– रांची।

प्रश्न– गाँधी जी देवघर कब गये थे?

उत्तर– गाँधी जी 1925 ई. में देवघर गये थे।

विश्व प्रश्नोत्तरी

प्रश्न –संसार में सबसे पहले पुस्तक छापने वाले व्यक्ति का नाम बताएँ ।

उत्तर –कोस्टर ।

प्रश्न –संसार की सबसे प्राचीन भाषा का नाम क्या है?

उत्तर –संस्कृत ।

प्रश्न –विश्व का सबसे लम्बा रेलमार्ग कहाँ है?

उत्तर –रूस में ट्रांससायबेरियन रेलमार्ग, जो मास्को में ब्लाडीवास्टक तक है।

प्रश्न – वह कौन सा देश है, जहाँ कपड़ों पर अखबार प्रकाशित होता है?

उत्तर – स्पेन ।

प्रश्न –खट्टा शहद कहाँ मिलता है?

उत्तर –यह ब्राजील के जंगलों में पाया जाता है।

प्रश्न –कौन-सा देश है, जहाँ सिनेमाघर नहीं हैं?

उत्तर –भूटान ।

प्रश्न –विश्व में कितनी भाषाएँ बोली जाती है?

उत्तर –लगभग 5000 भाषाएँ ।

प्रश्न – संसार की सबसे महँगी वस्तु क्या है?

उत्तर – यूरेनियम ।

प्रश्न –विश्व में कौन-सी महारानी थी, जिसनें मोम से भिगोया हुआ वस्त्र पहनकर अग्नि परीक्षा दी थी ?

उत्तर –फ्रांस की महारानी 'रिचर्ड' को अपने पति लुइस स्काउट द्वारा चारित्रिक सन्देह किये जाने के कारण अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिए मोम में डुबाया हुआ गाउन पहनकर जलती आग पर चलने के लिए बाध्य किया गया । रानी निर्दोष सिद्ध हुई।

प्रश्न – विश्व में कौन-सा देश है, जहाँ शोक दिवस पर राष्ट्रीय झण्डा नहीं झुकता ।?

उत्तर – सउ्दी अरब में ।

प्रश्न – किस राजा ने तम्बाकू पीना अनिवार्य कर दिया था?

उत्तर – पीटर दी ग्रेट, 15वीं शताब्दी में रूस में।

प्रश्न – किस देश में जहाँ महिलाओं को स्कूली शिक्षा (सह शिक्षा) नहीं दी जाती है?

उत्तर – सऊदी अरब में ।

प्रश्न – शाखा की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा बैंक कौन- सा है?

उत्तर – भारतीय स्टेट बैंक (16000+शाखाएँ, 21000 +एटीएम)

प्रश्न – विश्व में सबसे अधिक कर्मचारी किस प्रतिष्ठान में कार्यरत है?

उत्तर – भारतीय रेलवे में, 15.5 लाख नियमित कर्मचारी (2006-07 में) ।

प्रश्न – किस देश में वहाँ के निवासी पेड़ों पर रहते है?

उत्तर – कांगो बेसिन के निवासी (जेयरे अफ्रीका में)

प्रश्न – किस देश में इनकम टैक्स नहीं लगता ?

उत्तर – मोनाको में (यूरोप)

प्रश्न – सोना सबसे सस्ता कहाँ मिलता है?

उत्तर – लन्दन और न्यूयार्क में ।

प्रश्न – ईसा मसीह किस भाषा में बात करते थे?

उत्तर – अरमिया (तंउपब)।

प्रश्न – किस देश का कानून सबसे कठोर माना जाता है?

उत्तर – सऊदी अरब का ।

प्रश्न – किस देश के लोग अधिक परिश्रमी माने जाते है?

उत्तर – जापान के ।

प्रश्न – कहाँ के निवासी बर्फ के घरों में रहते हैं?

उत्तर – ध्रुव प्रदेश के ।

प्रश्न – किस नगर में दो महीने का दिन होता है?

उत्तर – हेमराफास्ट (नार्वे) में ।

प्रश्न – दुनिया में सबसे कम शब्द कौन-सी भाषा में है?

उत्तर – इटालिया।

प्रश्न – किस देश का प्रत्येक नागरिक सैनिक है?

उत्तर – इजराइल ।

प्रश्न – विश्व का सबसे धनी व्यक्ति कौन है?

उत्तर – कार्लोस स्लिम (मैक्सिको), 74 अरब डॉलर की सम्पति (2011) ।

प्रश्न – विश्व का सबसे बड़ा कार्यालय कौन से देश का है?

उत्तर – अमेरिका का रक्षा विभाग पेन्टागन जहाँ पर 29,000 कर्मचारी काम करते हैं।

प्रश्न – विश्व का सबसे बड़ा किसान कौन है ?

उत्तर – ढाई लाख मवेशियों का मालिक ब्राजील का कोएले

प्रश्न – किस राष्ट्र में ताश का अविष्कार हुआ ?

उत्तर – चीन में ।

प्रश्न – विश्व के सबसे अधिक धनी देश कौन-से हैं?

उत्तर – कुवैत, अरब अमीरात व बहरीन।

प्रश्न – विश्व के सबसे अधिक अपराध किस देश में होते हैं?

उत्तर – अमेरिका सर्वाधिक अपराधों हेतु कुख्यात है?

प्रश्न – किस देश में एक भी नदी नहीं है?

उत्तर – सद्दी अरब ।

प्रश्न – अलकतरे की झील किस देश में है?

उत्तर – टिनीडाड में ।

प्रश्न – विश्व का सबसे पुराना समाचार-पत्र कौन-सा है?

उत्तर – स्वीडन से प्रकाशित होने वाले 'अफिशियल जनरल'।

प्रश्न – सबसे अधिक पुस्तकालय कहाँ है?

उत्तर – भारत में, 57000 से अधिक पुस्तकालय है, जिनमें से 10 राष्ट्रीय महत्व के है।

प्रश्न – ऐसा कौन-सा पदार्थ है, जो आग में नहीं जलता है?

उत्तर – एस्बेस्टॉस ।

प्रश्न – विश्व में ऐसी कौन-सी झील है, जो प्रत्येक बारह वर्ष पर मीठे व खारे जल में परिवर्तित होती रहती है?

उत्तर – तिब्बत की उरूत्सी झील ।

प्रश्न – वह कौन-सा शहर है, जहाँ पाँच सूर्य दिखाई पड़ते हैं?

उत्तर – सिंग नाईट चूं (चीन) ।

प्रश्न – विश्व की सबसे लम्बी बस कहाँ है?

उत्तर – अमेरिका में जिसकी लम्बाई 76 फूट है, 11 टन भारी, 121 यात्री बैठ सकते हैं ।

प्रश्न – किस देश के डाक टिकट पर उस देश का नाम नहीं है।

उत्तर – ग्रेट ब्रिटेन ।

प्रश्न – किस देश के राष्ट्रपति की पत्नी को वनमानुष अपहरण करके ले गया था?

उत्तर – फ्रांस के राष्ट्रपति की पत्नी रेमाण्ड पाइन केयर, 1614 ।

प्रश्न – कौन व्यक्ति चार बार इंग्लैंड का प्रधानमंत्री बना ?

उत्तर – बिलियम एबर्ट ग्लेडस्टोन ।

प्रश्न – किस राजा ने दाढ़ी पर कर लगाया था? यह कर कब लगाया गया था।

उत्तर – पीटर दी ग्रीट ने। यह कर 15वी शताब्दी में लगाया था।

प्रश्न – खून जैसे लाल रंग की नदी कहाँ पर है।

उत्तर – स्पेन की टियोटिन खून समान लाल रंग की नदी है।

प्रश्न – संसार के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय का क्या नाम है।

उत्तर – पामिता विश्वविद्यालय, इटली ।

प्रश्न – विश्व में वह कौन-सा देश है, जहाँ मच्छर नहीं है?

उत्तर – फ्रांस ।

प्रश्न – विश्व की कौन-सी ऐसी नदी है, जिसमें मछली नहीं पाई जाती है?

उत्तर – जाईन नदी , फिलीस्तीन ।

प्रश्न – चीन में सिक्यांग को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के साथ जोड़ने वाली सड़क का नाम क्या है।

उत्तर – काराकोरम हाइवे।

प्रश्न – विश्व में सबसे बड़ी नमक की झील कहाँ है?

उत्तर – केस्पो यनसी, रूस में ।

एक नजर

- भारत में सबसे अधिक ताम्बा झारखण्ड में पाया जाता है।
- झारखण्ड में सबसे पहले बिजलीघर तिलैया में स्थापित किया गया।
- झारखण्ड का प्रथम अशोक चक्र श्री रणधीर वर्मा को प्राप्त हुआ।

- जमशेदपुर को झारखण्ड की इस्पात नगरी कहा जाता है।
- 1897 में बिरसा मुण्डा हजारीबाग जेल से रिहा किये गये।
- जनीशिकार, देशउली एकमात्र पर्व है जो झारखण्ड में 12 वर्षों में एक बार मनाया जाता है।
- झारखण्ड में कुल विधायकों की संख्या 81.1 (आंग्ल भारतीय द्वारा) है।
- झारखण्ड का राजकीय पशु हाथी है।
- झारखण्ड की राष्ट्रीय पक्षी कोयल है।
- आदिवासी महासभा का गठन 1938 ई॰ में हुआ जिसका नेतृत्व जयपाल सिंह ने किया।
- 9 नवम्बर 1942 ई. को जय प्रकाश नारायण हजारीबाग जेल से भाग गये थे।
- महात्मा गाँधी श्याम कृष्ण सहाय के निमंत्रण पर पहली बार
- 4 जून 1917 को राँची गये थे।
- रुपये का सिक्का सर्वप्रथम शेरशाह सूरी के शासनकाल में ढाला गया था।
- सोडियम पानी में डालते ही जलने लगता है।
- इन्दिरा गाँधी का मुल नाम इन्दु प्रियदर्शी था।
- विश्व का सबसे छोटा देश वेटिकन सिटी (यूरोप) है।
- अंग्रेजों ने सबसे पहले बहादुर शाह जफर का राज्य छीना था।

झारखण्ड में प्रथम व्यक्ति

प्रथम		व्यक्ति
प्रथम राज्यपाल	–	प्रभात कुमार
प्रथम मुख्यमंत्री	–	बाबू लाल मराण्डी
विधानसभा के प्रथम स्पीकर	–	इन्दर सिंह नामधारी
विपक्ष के प्रथम नेता	–	स्टीफन मराण्डी
उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश	–	विनोद कुमार गुप्ता
प्रथम मुख्य सचिव	–	वी. एस. दूबे
प्रथम आरक्षी महानिरीक्षक	–	शिवाजी मोहन काइटे
झारखण्ड लोक सेवा आयोग के प्रथम अध्यक्ष	–	फटीक चन्द्र हेम्ब्रम
विधानसभा के प्रथम नामांकित सदस्य	–	जोसफ पंचेली गालस्टीन

ऐतिहासिक तथ्य

- बाबर की मृत्यु आगारा में हुई थी। पहले उसे आगारा में आरामबाग में दफनाया गया था। बाद में उसके शव को काबुल ले जाया गया।
- मुहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान की मांग का प्रस्ताव सन् 1940 के मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में किया था।
- आगरा का ''लाल किला'' अकबर ने बनवाया था।
- दिल्ली का ''लाल किला'' शाहजहाँ ने बनवाया था।
- 'खालसा पंथ' की स्थपाना गुरू गोविन्द सिंह ने की थी।
- दिल्ली में स्थित कुतुबमीनार का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रारंभ कराया था तथा इल्तुतमिश ने इसे पूरा कराया था।
- नालन्दा भारत का सर्वाधिक पुराना शिक्षा केन्द्र है जिसे आज नालंदा खण्डहर के नाम से जाना जाता है।
- 'मर्चेन्ट ऑफ इण्डिया सोसाइटी' की स्थापना गोपालकृष्ण गोखले ने की थी।
- भारत में ''जमींदारी प्रथा'' अंग्रेजों ने प्रारम्भ की थी।
- महाराजा रणजीत सिंह ने अफगानिस्तान के भगोड़े शासक शाहशुजा से विश्व प्रसिद्ध कोहनूर प्राप्त किया था।
- भारत भूमध्य रेखा के उत्तर में 8°4' से 37°6' उत्तरी आक्षांश एवं 68°7' से 97°25' पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है।
- भारत और पाकिस्तान के बीच की सीमा रेखा को ''रेडक्लिफ रेखा'' कहते हैं।
- भारत और चीन के बीच की सीमा रेखा को ''मैकमोहन रेखा'' कहते हैं।
- भारत में आधुनिक डाक प्रणाली सन् 1837 में आरम्भ हुई थी।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से **भारत विश्व** का **सातवां** सबसे बड़ा देश है तथा जनसंख्या के आधार पर संसार में चीन के बाद **दूसरा** स्थान है।
- आलस्य दरिद्र का मूल है।
- भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना 1935 ई० में हुई थी।

राज्यों के राजधानी, राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री

राज्य		राजधानी
आंध्र प्रदेश	–	हैदराबाद
अरुणाचल प्रदेश	–	इटानगर
असम	–	दिसपुर

• बिहार	–	पटना
• छत्तीसगढ़	–	रायपुर
• गोवा	–	पणजी
• गुजरात	–	गांधी नगर
• हरियाणा	–	चंडीगढ़
• हिमाचल प्रदेश	–	शिमला
• जम्मू-कश्मीर	–	श्रीनगर (ग्रीष्म), जम्मू (शीत)
• झारखंड	–	राँची
• कर्नाटक	–	बंगलुरू
• केरल	–	तिरूवनंतपुरम
• मध्य प्रदेश	–	भोपाल
• महाराष्ट्र	–	मुम्बई
• मणिपुर	–	इम्फाल
• मेघालय	–	शिलॉग
• मिजोरम	–	आइजोल
• नागालैण्ड	–	कोहिमा
• ओडीसा	–	भुवनेश्वर
• पंजाब	–	चंडीगढ़
• राजस्थान	–	जयपुर
• सिक्किम	–	गंगटोक
• तमिलनाडु	–	चेन्नई
• त्रिपुरा	–	अगरतल्ला
• उत्तर-प्रदेश	–	लखनऊ
• उत्तराखंड	–	देहरादून
• पश्चिम बंगाल	–	कोलकाता
• तेलंगना	–	हैदराबाद
• दिल्ली	–	नई दिल्ली
• पुदुचेरी	–	पुदुचेरी
• अंडमान एवं निकोबार द्वीप	–	पोर्टब्लेयर
• चंडीगढ़	–	चंडीगढ़
• दादरा और नगर हवेली	–	सिलवासा
• दमन और दीव	–	दमन
लक्षद्वीप	–	कावारती

नया केंद्रीय मंत्रिमंडल

मंत्री	कैबिनेट
नरेन्द्र मोदी	– प्रधान मंत्री कार्मिक, जन शिकायत और पेंशन, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष के साथ वे सभी विभाग जो किसी को आवंटित नहीं है।
राजनाथ सिंह	– गृहमंत्री
सुषमा स्वराज	– विदेश मंत्री
सुरेश प्रभु	– रेल मंत्री
मनोहर पार्किकर	– रक्षामंत्री
अरुण जेटली	– वित्त और सूचना एवं प्रसारण
सदानन्द गोड़ा	– कानून
वेंकैया नायडू	– शहरी विकास, आवास व शहरी गरीबी उन्मूलन, संसदीय मामले
नितिन गडकरी	– सड़क, परिवहन व जहाजरानी
उमा भारती	– जल संसाधन एवं गंगा पुनरूद्धार
नजमा हेपतुल्ला	– अल्पसंख्यक मामलों का मंत्रालय
रामविलास पासवान	– उपभोक्ता मामला, खाद्य एवं जनवितरण
कलराज मिश्रा	– सूक्ष्म, लघु मध्यम उद्यम
मेनका गांधी	– महिला एवं बाल कल्याण
अनंत कुमार	– रासायन व उर्वरक
अनंत गीते	– भारी उद्योग व सार्वजनिक उद्यम
रविशंकर प्रसाद	– संचार एवं आइटी
जेपी नड्डा	– स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
अशोक गजपति राजू	– नागरिक उड्डयन
हरसिमरत कौर बादल	– खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
डॉ० हर्षवर्द्धन	– स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
नरेंद्र सिंह तोमर	– खनन एवं इस्पात
चौधरी बीरेन्द्र सिंह	– ग्रामीण विकास, पंचायती राज, पेयजल एवं स्वच्छता
जुएल ओरांव	– आदिवासी कल्याण
राधा मोहन सिंह	– कृषि
थावर चन्द गलहोत	– सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
स्मृति ईरानी	– मानव संसाधन एवं विकास
हर्षवर्धन	– विज्ञान एवं तकनीक

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

मंत्री		मंत्रालय
जनरल वी.के. सिंह	–	सांख्यिकी और कार्यान्वयन मंत्रालय एवं राज्य मंत्री
राव इंद्रजीत सिंह	–	योजना एवं रक्षा राज्य मंत्री
संतोष कुमार गंगवार	–	कपड़ा मंत्री

मंत्री		मंत्रालय
बंडारू दत्तात्रेय	–	श्रम एवं नियोजन
राजीव प्रताप रूड़ी	–	कौशल विकास एवं उद्यमिता और संसदीय कार्य राज्य मंत्री
श्रीपद नाइक	–	आयुष और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री
धर्मेन्द्र प्रधान	–	तेल एवं प्राकृतिक गैस
सर्वानन्द सोनोवाल	–	खेल एवं युवा
प्रकाश जावड़ेकर	–	पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन
पीयूष गोयल	–	ऊर्जा, कोयला एवं अक्षय ऊर्जा
डॉ० जितेन्द्र सिंह	–	पूर्वोत्तर विकास एवं प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, पेंशन और और परमाणु ऊर्जा व अंतरिक्ष विकास राज्यमंत्री
निर्मला सीताराम	–	वाणिज्य एवं उद्योग, वित्त
डॉ. महेश शर्मा	–	पर्यटन व संस्कृति और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री

राज्य मंत्री

मंत्री		मंत्रालय
मुख्तार अब्बास नकवी	–	अल्पसंख्यक एवं संसदीय
रामकृपाल यादव	–	पेयजल एवं स्वच्छता
एच. पी. चौधरी	–	गृह
सांवरलाल जाट	–	जल संसाधन एवं गंगा पनरुद्धार
मोहन भाई कल्याण भाई कुंदरिया	–	कृषि
गिरिराज सिंह	–	सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रम
हंसराज गंगाराम अहीर	–	रसायन एवं उर्वरक
जीएम सिद्धेश्वर	–	भारी उद्योग एवं लोक उपक्रम
मनोज सिन्हा	–	रेलवे
निहालचंद	–	पंचायती राज
उपेन्द्र कुशवाहा	–	मानाव संसाधन विकास
पी. राधाकृष्णन	–	सड़क परिवहन, राजमार्ग एवं जहाजरानी
किरण रिज्जू	–	गृह
कृष्णपाल गुर्जर	–	सामाजिक न्याय व शशक्तिकरण
संजीव कुमार बालियान	–	कृषि
मनसुख भाई धांजी भाई वासव	–	आदिवासी विकास
राव साहब दादाराव दानवे	–	उपभोक्ता, खाद्य एवं जनवितरण
विष्णु देव साई	–	खान एवं इस्पात
सुदर्शन भगत	–	ग्रामीण विकास
रामशंकर कठेरिया	–	मानव संसाधन विकास
वाई. एस. चौधरी	–	विज्ञान एवं तकनीकी
जयंत सिन्हा	–	वित्त
कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौर	–	सूचना एवं प्रसारण
बाबुल सुप्रियो	–	शहरी विकास, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन
साध्वी निरंजन ज्योति	–	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
विजय संपाला	–	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता

★★★

आखिर क्यों?

जानकारियाँ ही जानकारियाँ

Your Aim is yours.
So don't change it for others
But Your character is not yours
So change it for others

